www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

31st MAY 2020
Issue 02 • Part 01
BOOK 005

सबका खुशी से फासला बस दो कदम है, हर घर में बस ! एक ही कमरा है...

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

प्रेरणा
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक
नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm)
Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

• लाभार्थी •
पू. मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. की प्रेरणा से
चंद्राबेन कीर्तीलाल फड़िया
रुपाल-मलाड

पू. मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा. की प्रेरणा से
शांताबेन नगीनदास शाह
हरसोल - मलाड

ज्ञान गंगा में डुबकी

सादर प्रणाम,

यह Knowledge Book से द्वितीय अंक (2nd Issue) का प्रारंभ हो रहा है। द्वितीय अंक का यह प्रथम भाग (Part 1) तत्वज्ञान पूर्ण है।

जिज्ञासा के समाधान में पूज्य आचार्य भगवंत श्री के गीतार्थता का अद्भुत लाभ हमें प्राप्त हो रहा है। हम धन्य हैं।

साथ ही कथा और उपदेश के लेख पाठकों के लिए खूब हृदयस्पर्शी रहेंगे, यह हमारा अंतर्मन पुकारता है। आप यह वाचन से कर्मक्षय करें और सद्वाचन के लिए सब को प्रेरित करके "करावण" का लाभ प्राप्त करें।

यही शुभकामना के साथ...

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Must Read

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit: **www.faithbook.in**

To Receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp. Please Message us on **81810 36036**

Click on below icons to Follow, Like & Subscribe : **FaithbookOnline**

All icons are Clickable

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

प्रतिकार

धन के बिना धर्म नहीं होता तो धन मूर्छा त्याग का उपदेश क्यूं? (भाग 2)

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरीश्वरजी म.सा.

हम प्रथम प्रश्न के जवाब पर विचार मन्थन कर रहे थे।

जो लोग पुण्यशाली हैं, 3-4 घण्टे व्यवसाय करके इतनी कमाई कर लेते हैं, कि खर्च तो आराम से निकल जाता है, उपरान्त सम्मानजनक पूँजी भी एकत्र हो जाती है। ऐसे भाग्यशालियों को खाली समय में क्या करना चाहिए? इसके लिए हमारे पास तीन विकल्प हैं।

(1) नए-नए व्यापार चालू करके धन और लोभ बढ़ाना,
(2) भोग-विलास एवं पापवृत्तियाँ बढ़ाना, या
(3) धार्मिक प्रवृत्तियाँ बढ़ाना

इनमें से प्रथम विकल्प क्यों सही नहीं है, यह हम पिछले अंक में पढ़ चुके हैं। कोई भी सज्जन व्यक्ति दूसरे विकल्प को उचित माने, ऐसा सम्भव नहीं है। क्योंकि यह स्पष्ट बात है, कि भोग यात्रा का कभी अन्त नहीं होता। जो लोग भोग के मार्ग पर चल रहे हैं, उनसे पूछिए। मार्ग खत्म होने वाला है, या बस थोड़ा ही मार्ग बचा है - क्या कभी ऐसा अनुभव हुआ है? या जितना रस्ता निकला, बाकी का बचा रस्ता उससे कईं गुना अधिक है, आगे बहुत दूर जाना है, इसकी मंजिल मिलने के तो आसार ही नहीं दिखाई नहीं देते - ऐसा अनुभव हुआ है क्या?

दूसरों से क्या पूछना, आप अपने आप से ही पूछिए TV खरीदा, मोबाइल लिया, इतने वर्षों से इस्तेमाल भी कर रहे हैं, अब अन्तःकरण से उत्तर दीजिए, क्या सन्तोष अनुभव हो रहा है? क्या तृप्ति के भाव आ रहे हैं? क्या कभी ऐसा महसूस हुआ है की बस छः-आठ महीने और, फिर

सारी इच्छाएँ शान्त हो जाएगी ? या नई-नई अनेक नई-नई इच्छाएँ जन्म ले रही हैं, ऐसा लगा है।

यह बात कभी मत भूलिए, कि जीव जैसे-जैसे भोग के मार्ग पर आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे तृप्ति नहीं, बल्कि अतृप्ति और तृष्णा की व्यापकता बढ़ती है। आपको स्मरण रखना होगा कि भोग-विलास की एक निश्चित सीमा तक ही सदाचार का पालन संभव है। जब भोग उस मर्यादा को लंघन करता है, तब सदाचार, पवित्रता और सज्जनता का भोग चढ़ जाता है।

आज TV और मोबाइल ने सदाचार आदि का भोग ले ही लिया है। परस्त्री को भी घूरकर देखा जा सकता है, गन्दी नजर डाली जा सकती है, अंगोपांग भी देखे जा सकते हैं। सदाचार, पवित्रता आदि की बात ही कहाँ रही?

यह सत्य है कि भोग-विलास बढ़ने के साथ-साथ पाप भी निश्चित तौर पर बढ़ेंगे। चलिए, एक प्रश्न पूछता हूँ ...मान लीजिए कि आपकी सालाना आमदनी दस लाख और खर्चा छः लाख है, मतलब चार लाख की नेट बचत है। वैसे देखें तो खर्चा सारा चुकता कर दिया, कोई भी देनदारी बाकी नहीं है, ये चार लाख एक्स्ट्रा ही हैं। ऐसा पिछले दस वर्षों से हो रहा है। "ये पैसे एक्स्ट्रा ही हैं, तो गटर में डाल देते हैं" - क्या कभी ऐसा विचार मन में आया है?

"अरे ! महाराज साहेब ! कैसी बात करते हैं? एक्स्ट्रा पैसे क्या गटर में बहाने के लिए होते हैं? मौका मिले तो ये पैसे इन्वेस्ट करके चार के चौदह करने चाहिए। नहीं तो बचत करके सुरक्षित रखने चाहिए, कभी भी काम आ सकते हैं। फेंकने ही होते, तो इतने कमाते ही क्यों?"

अरे भाग्यशाली ! मैं भी तो यही कहना चाहता हूँ। दुनिया में करोड़ों लोग ऐसे हैं, जो पुण्यशाली नहीं है। सुबह से देर रात तक मजदूरी करते हैं, तब जाकर बड़ी मुश्किल से दो वक्त की रोटी मिलती है। बचत की तो बात ही कहाँ है? न उनके पास पैसे बचते हैं, न वक्त और न ही पुण्य की बचत है। लेकिन जो लोग 3-4 घण्टे में ही जरूरत से ज्यादा कमा लेते हैं, उनके पास पैसे भी बचे, वक्त और पुण्य भी बचा।

अब जो पैसे बचे, उसका जैसा आपने कहा, उसे कहीं न कहीं इन्वेस्ट करते हैं, कोई गटर में नहीं बहाता, तो फिर बचे हुए समय और बचे हुए पुण्य का क्या करना चाहिए?

आप ही कहते हैं, Time is more than money, यदि पैसे गटर में नहीं डाल सकते, तो समय तो बिलकुल नहीं डाल सकते। उसका भी तो लाभदायक निवेश होना चाहिए। TV देखने बैठ गए, मोबाइल में गेम खेलने लगे, चैट करने में 2-3 घण्टे बिगाड़े। विचार कीजिए, क्या यह बचत हुई? इन्वेस्ट किया? या फिर गटर में डाला?

पुण्य के सन्दर्भ में भी ये ही तीन प्रश्न उपस्थित होते हैं। पुण्य को इस तरह गटर में डाल कर बर्बाद ही करना था, तो फिर पूर्वभव में प्रभु-पूजा, सुपात्र दान, तीर्थ यात्रा, सामायिक, प्रतिक्रमण, नवकार-जाप, जीवदया, अनुकम्पा आदि करके इतना ज्यादा पुण्य कमाने की जरूरत ही क्या थी?

एक बात समझ लीजिए, कि पैसे और समय - इन दोनों की तुलना में पुण्य का महत्त्व अनेक गुना अधिक है। क्योंकि यदि पुण्य प्रबल है, तो पैसे या समय हो या न हो, आपका काम जरूर होगा, किन्तु यदि पुण्य ही नहीं है, तो पैसा और समय होने पर भी वह आपके उपयोग में नहीं आ पाएगा।

इसलिए पैसे का Investment या saving जितनी जरूरी है, उसकी तुलना में पुण्य का investment और saving कहीं अधिक जरूरी है, क्या यह बात आपको समझानी पड़ेगी?

बस! इसीलिए हम पुण्यशाली जीवों को कहते हैं कि तीसरा विकल्प अपनाना चाहिए। इसलिए Extra समय में धार्मिक प्रवृतियाँ बढ़ाइए। इस Extra पुण्य को (अर्थात् Extra मिले समय को) अष्टप्रकारी पूजा में, जिनवाणी श्रवण में, संघ के कार्यों में, साधर्मिक भक्ति, जीवदया और अनुकम्पा के कार्यों में जोड़ें। इन सब कार्यों से ही आपका पुण्य invest होगा और ये सब शेयर बाजार की नफे वाली कम्पनियाँ हैं। ये Index को कितना ऊपर लेकर जाएगी, दस रुपये के शेयर का 25,50,100,200,1000 कितना भाव आएगा? यह सब आपके हाथ में है। इस शेयर बाजार की तेजी भी आपके हाथ में है, और मन्दी भी। आप अपने शुभ भावों को जितना ऊपर ले जाएँगे, उतने ही इन शेयरों के भाव भी बढ़ते जाएँगे।

अब एक ऐसी बैंक की कल्पना कीजिए जिसमें आपका खाता है। यह बैंक खुद Balance update करती है, लेकिन खाता धारक को जानकारी नहीं देती। अनेक सौदे Cash में नहीं बल्कि Cheque से होते हैं। और यदि गलती से Overdraft हो गया तो बारह महीने की बमुशक्कत जेल होती है। अब खातेदार क्या करेगा? जैसे ही हाथ में पैसे होंगे, तुरन्त बैंक में जमा कर देगा, बेलेन्स घटना नहीं चाहिए।

कुदरत की बैंक का भी कुछ ऐसा ही है। हम सब इसके Account Holder हैं। हमारा दान, शील, तप, भाव - इन चारों में से हम जो भी धर्म करते हैं उससे हमारे पुण्य की balance बढ़ती है और पूर्वभव के पुण्य की balance उसमें carry forward होकर आती है।

इसके विपरीत, यदि संसार की मीठी नीन्द में सो गए, पुण्य का एक चैक Encash हो गया। सुबह उठे, एक और चैक फटा, Switch on किया तो लाइट चालू हुई (लाइट गई हुई नहीं थी, न ही फ्यूज़ उड़ा हुआ था), एक-एक चैक और clear होता गया। शौच गए, और पेट साफ़ हुआ, नल चालू किया और पानी आ गया, इस प्रकार पूरे दिन जो भी

कार्य किए, सबमें पुण्य के चैक का खर्च होता है, और पुण्य के Balance में से Debit होता रहता है।

अब यदि हमें पता करना है, कि पुण्य की कितनी balance बची है, ताकि नया पुण्य किया जाये, तो कुदरत की यह बैंक हमें balance नहीं बताती। किसी भोज में गए, थोड़ा ज्यादा खा लिया, Overdraft हो गया। अब आने वाले दिन पांच बार शौच जाना पड़ेगा, और तीन बार का भोजन भी छोड़ना पड़ेगा। यह एक प्रकार की सजा ही हुई। ये तो छोटे Overdraft हुए, इसलिए सजा भी छोटी हुई, यदि बड़ा Overdraft होता तो?

श्री कल्पसूत्र में एक कथा आती है, कुछ मुसाफिर एक जंगल से गुजर रहे थे, लेकिन जंगल उनके अनुमान से बड़ा निकला। गर्मी भी बहुत थी, इसलिए साथ में लिया हुआ पानी खत्म हो गया था। सबको प्यास लगी तो पानी की खोज में उन्हें एक जगह बहुत से पानी के चश्मे दिखाई दिये। पानी मिलने की उम्मीद में उन्होंने एक चश्मा फोड़ा, तो उसमें से मीठा, निर्मल और बहुत सारा पानी मिला। सबने अपनी जरूरत जितना पानी पी लिया। साथ में रखे घड़े आदि भी पूरे भर लिए। फिर भी उन्होंने दूसरा चश्मा फोड़ने का विचार किया।

एक वृद्ध और अनुभवी मुसाफिर बोला, कि हमें अपनी जरूरत जितना पानी मिल गया, तो फिर दूसरा चश्मा फोड़ने की क्या जरूरत है? लेकिन कुछ जोशीले युवक नहीं माने, उन्होंने दूसरा चश्मा भी फोड़ा। उसमें से चाँदी के सिक्के निकले, सबने बराबर भाग में सिक्के बाँट लिए। अब आप बताइए, क्या वो मुसाफिर आगे बढ़ेंगे?

"नहीं महाराज ! अब तो तीसरा चश्मा भी फोड़ने का मन होगा।"

"लेकिन क्यों? उद्देश्य तो सिर्फ प्यास बुझाने का था, उसकी जगह घड़े भी भर लिया, और तो और चाँदी भी मिल गई। अब और क्या चाहिए?"

"महाराज ! यदि तीसरे में से चाँदी और कोई अनमोल चीज मिल जाए, तो फोड़कर देखना चाहिए।"

"यदि दूसरे चश्मे से धूल-कंकर निकलते तो क्या तीसरा चश्मा फोड़ते?"

"बिलकुल नहीं! धूल-मिट्टी के लिए फालतू में इतनी मेहनत क्यों करें?"

"यही जीवन का सूत्र है, **लाभ ही लोभ को बढ़ाता है और लाभ से कभी सन्तोष नहीं होता।"**

उस वृद्ध मुसाफिर के रोकने पर भी सभी उत्साहित युवकों ने तीसरा चश्मा भी फोड़ा। उसमें से स्वर्ण मुद्राएँ मिली। और सब ने आपस में बाँट ली। फिर तो वृद्ध मुसाफिर की पूरी अवगणना करते हुए उन्होंने चौथा ढेर भी फोड़ा, उसमें से बहुमूल्य रत्न निकले, सबकी आँखें चमक उठी, और सब ने रत्न भी आपस में बाँट लिए।

अब पांचवां ढेर फोड़ने की तैयारी थी, उस वृद्ध ने बहुत समझाया कि तुम्हारी सात पीढियाँ खा सके इतना धन मिल चुका है, अब तो सन्तोष करो, लेकिन उसकी कोई सुनने वाला नहीं था।

'अरे बूढ़े ! तुम्हारी तो 'साठे बुद्धि नाठी' हो चुकी है, तुम्हारी सुनते तो इतना भी नहीं मिलता। अपना पागलपन छोड़ो। आज हमारा पुण्य जोरों पर है, इसलिए हमें रोकने की कोशिश मत करो। जिन्दगी में ऐसे मौके रोज-रोज नहीं मिलते।'

वृद्ध मुसाफिर की ना-नकुर के बीच सबने पांचवां चश्मा फोड़ा, और Overdraft हुआ। पानी, चाँदी, स्वर्ण और रत्न लेने के चक्कर में एक के बाद एक पुण्य का चैक Encash होता गया और पुण्य की Balance खत्म हो गई। वे सब Overdraft

करने गए और, उन्हें भयंकर सजा हुई। उस चश्में से चण्डकौशिक सर्प जैसा एक दृष्टि विष निकला। उसने अपना विष छोड़ा, और सब लोग यमलोक पहुँच गए। उस वृद्ध ने सच्ची सलाह दी थी, इसलिए वनदेवता ने उसे बचाया और उचित स्थान पर छोड़ दिया।

कल्पसूत्र की यह कथा आज के समय भी उतनी ही प्रस्तुत है। अपने व्यापार-धन्धे में मेहनत करके बहुत पैसे कमाए। कटौती कर-कर के बचत की और पच्चीस वर्ष में पच्चीस लाख की पूंजी जमा की। अब शेयर मार्केट में Easy Earning दिखने लगी। पच्चीस सालों में नहीं कमाया, उतना चार-पांच सालों में कमाना। अपने धन्धे में इतना Bright Future नहीं दिख रहा था। इसलिए पच्चीस में से पांच निकाले और शेयर में डाल दिये। पांच के सात हुए, फिर नया सौदा किया, सात के दस हुए तो जमा पूंजी में से दस और निकाले। अब बीस लाख से धन्धा किया। कुछ ही समय में बीस के पैंतीस हो गए, तो जमा पूंजी के बाकी के पांच भी शेयर में लगा दिए। दो-तीन साल में ही पूंजी बढ़कर 70 की हो गई।

अपने किसी खास बड़े-बुजुर्ग ने राय दी, कि अब शेयर मार्केट से बहार निकल जाओ। इस जिन्दगी में जितने चाहिए, उतने तो बन ही गए हैं। इसलिए सन्तोष कर ले...

जब इतनी आसान कमाई हो रही हो तो क्या ऐसी सलाह पसन्द आएगी? वह बुजुर्ग फिर से सलाह देता है कि मेहनत के 25 लाख तो निकाल ले। बाकी के पैसों से खेलना हो तो खेलते रहना।

तो आप कहते हैं, "अरे ! अभी तो मेरे सारे Stars अनुकूल चल रहे हैं, पुण्य जोरों पर है, ऐसा Chance रोज-रोज थोड़े ही मिलता है? अभी तो ये 70-75 भी कम पड़ रहे हैं, मैं तो डेढ़ करोड़ का धन्धा करने वाला हूँ।" और वास्तव में कर डाला।

पांच के सात, सात के दस ... इस प्रकार हर Step पर पुण्य के चैक Encash होते गए, Balance घट रही थी। कुदरत की बैंक तो Balance बताती नहीं। 70 तक पहुँचते-पहुँचते balance खत्म हो चुकी थी। अब साहस करके बड़ा सौदा किया, Overdraft हुआ। कर्म सत्ता ने सजा के रूप में ऐसा फटका मारा कि कमर टूट गई। पत्नी के गहने बिक गए, फ्लैट बिक गया, भाड़े के रूम में रहना पड़ रहा है। मन में भारी आघात और उदासी छाई हुई है।

यदि ऐसे दिन देखने की इच्छा नहीं है, तो लोभ पर ब्रेक मारने की जरूरत है, सन्तोष धारण करने की जरूरत है और जब भी Chance मिले, पुण्य का Balance बढ़ाने की जरूरत है।

इसलिए जो लोग 3-4 घण्टे में ही जरूरत से ज्यादा कमा लेते हैं, उन्हें बचे हुए Time में नया धन्धा या भोग-विलास न करके धर्म बढ़ाना चाहिए। ऐसे उपदेश वास्तव में सार्थक हैं।

विशेष अगले अंक में ...

जैन महाभारत

मै भीष्म पितामह (भाग : 2)

पूज्य आचार्य श्री आत्मदर्शन सूरीश्वरजी म.सा.

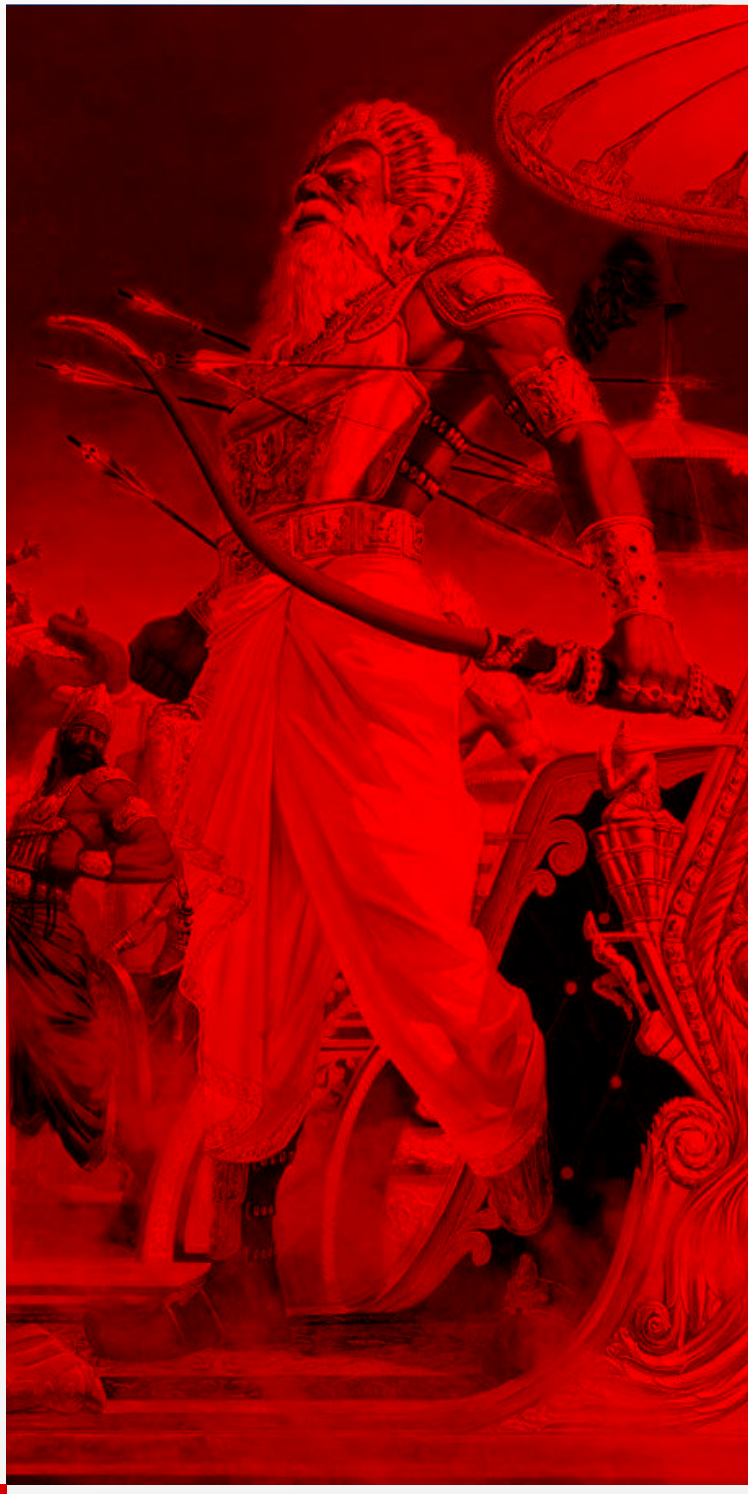

युगादिदेव ऋषभदेव भगवान के भरतादि सौ पुत्र थे। उनमें से एक कुरु नामक पुत्र भी था। इसी कुरु के नाम से कुरु देश प्रसिद्ध हुआ था। कुरु के पुत्र हस्ती के नाम से हस्तिनापुर को बसाया गया। इस हस्तिनापुर के सिंहासन पर अनेक पुण्य-प्रतापी, शूरवीर राजाओं ने शासन किया। उन्हीं की परम्परा में शांतनु भी एक शूरवीर और न्यायी राजा हुआ। उसी शांतनु की संतान मैं गांगेय 'भीष्म'। बचपन से ही चारण मुनियों की सतत सत्संगति से मैं अहिंसादि पांच व्रतों को यथाशक्ति धारण करता था। पूर्व में आपने देखा कि मैंने पिताश्री की सत्यवती नामक कन्या के साथ विवाह करने की इच्छा पूर्ण करने के लिए आजीवन राजगद्दी का त्याग और ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार किया। आजकल संतानों को खुश रखने के लिए बुजुर्ग, माता-पिता आदि अपने सुख और मनोरथों का त्याग कर देते हैं अपनी भावनाओं को दबाकर रखते हैं। जबकि मैंने अपने पिताजी को खुश रखने के लिए, उनके सुख के लिए अपने जीवन की दो बड़ी खुशियों का बलिदान दिया।

अब मैं मूल बात पर आता हूं। सत्यवती वास्तव में नाविक की पुत्री नहीं थी, बल्कि नाविक राजा को वर्षों पहले यमुना के तट पर अशोक वृक्ष के नीचे तेज के भंडार स्वरुप यह बालिका मिली थी। उसके मुख को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए नाविक राजा ने अपने ऊपर आयी जिम्मेदारी को खुशी-खुशी स्वीकार किया। उस पुत्री को हाथ में लेते ही आकाशवाणी हुई कि भरतपुर के राजा रत्नांगद की पत्नी रत्नावती ने पुत्री को जन्म दिया ही था। जन्म के

तुरन्त बाद राजा के किसी गुप्त शत्रु ने इस बालिका का अपहरण करके यहां रख दिया है। तेज-तर्रार इस कन्या के साथ भविष्य में शांतनु राजा का विवाह होगा। नाविक ने आगे जाकर पुत्री से भी अधिक महत्त्व रखने वाली उस राजकन्या को ऐसे संस्कार और ऐसी शिक्षा प्रदान की कि उसकी भावी सन्तान भी संस्कार में जरा भी कम न हो बाकी तो मेरे जैसे रंक के घर ऐसा रत्न कहां से हो? मैं आज कृतार्थ हूं। सत्यवती अगर मेरी सगी पुत्री होती और मैं सत्यवती का पालक पिता न होता, तो मैंने कभी यह आग्रह न रखा होता कि सत्यवती का पुत्र ही राजा बनना चाहिए। मालिक अपनी वस्तु का मूल्य घटा सकता है, पर पालक उस मूल्य को कैसे घटा सकता है?

महामानव भीष्म! आपको अगर मेरे कारण दुःख हुआ हो, तो क्षमा करें। मैंने कहा-हे नाविक श्रेष्ठ! आपके द्वारा सत्यवती को एक राजनेता बनने हेतु दी गयी शिक्षा सर्वतः स्वीकार होगी। माता सत्यवती के द्वारा हमारे कुरु वंश में विद्याधरों का पवित्र रक्त पुनः प्रवाहित होगा, क्योंकि यह विद्याधर पत्नी और विद्याधर राजा रत्नांगद-आदिनाथ प्रभु के पालक पुत्रों-नमि-विनमि की संतानें हैं। केवल हमारा कुल ही नहीं, बल्कि समस्त हस्तिनापुर इस घटना से धन्य बनेगा। मेरे पालक नानाजी के रूप में मैंने आपके चरणों में मस्तक झुकाया है।

समय बहता है, साथ ही वय भी बहती है। समय और वय किसी का इन्तजार नहीं करते। इन्हें कोई रोक नहीं सकता। व्यक्ति के अद्भुत कार्य ही समय को भी विस्मय में डाल देते हैं। मेरी भीष्म प्रतिज्ञाओं के कारण मैं गांगेय से 'भीष्म' बन गया। अभी तो मैं भरयौवन में आ गया था। मेरे पिता के समाधिस्थ मृत्यु पाने से पहले ही माता सत्यवती दो बालकों की माता बन चुकी थी। बड़े पुत्र का नाम चित्रांगद और छोटे का नाम विचित्रवीर्य था। दोनों मेरे सौतेले भाई थे, पर मैंने इन दोनों को सगे भाइयों से बढकर माना। चित्रांगद बड़ा था, तो मैंने उसे राजगद्दी पर बिठाया। जिससे नानाश्री नाविक राजा की इच्छा पूरी हुई। उत्तम माता-पिता की संतानें उत्तम ही होती हैं फिर भी इन्सान आखिर इन्सान ही होता है, भगवान नहीं। **माता-पिता, बुजुर्गजनों की खामियाँ-खूबियाँ संतान में आती ही हैं।** हमारे पिता

महाराजा श्री शांतनु की अनेक खूबियाँ थीं पर एक खामी भी थी। उनकी कमजोर कड़ी थी-शिकार करना। इसने उनकी सभी खूबियों को ढक दिया था। चित्रांगद और विचित्रवीर्य में भी ऐसा ही कुछ हुआ। वे भी एक-एक कमजोर कड़ी के भोग बन गये।

ऐसा हुआ कि नीलांगद नामक बौद्ध राजा ने हमारे राज्य पर चढाई कर दी। मैंने युद्ध की तैयारी भी की, पर चित्रांगद के मन में इच्छा हुई। उसने मुझे कहा कि बड़े भाई! आप न जायें। इस समय मुझे युद्ध भूमि पर युद्ध करने के लिए पहले जाने दें। मैंने मना किया, पर वह नहीं माना। युद्धकाल में वह जीवित नहीं रह सका। बाल हठ के आगे मैं मजबूर बन गया और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। बाद में तो मैंने नीलांगद को जीवित पकड़ा और तलवार के एक ही वार में उसे यमलोक पहुंचा दिया। पर याद रखो-बड़ों का कहना न मानने पर चित्रांगद की जो दशा हुई, वही दशा किसी भी संतान की हो सकती है।

बड़े लोग अनुभवी होते हैं। उनकी वय अनुभव युक्त होती है, उन्होंने कितने उतार–चढाव, बसन्त-पतझड़ देखे होते हैं। उनका चिर-अनुभव संतानों के लिए अमृतबेल का काम करता है। संतानों को तो मात्र वर्तमान ही दिखाई देता है, पर इन बुजुर्गों की नजरों के आगे संतानों का विशाल भविष्य और स्वयं का भूतकाल खड़ा हुआ होता है। संतानों के भविष्य को भव्य बनाने के लिए ये बुजुर्ग अपने भूतकाल का अमृत परोस देते हैं। **अत: कभी भी बुजुर्गों के हितकारी वचनों की अवगणना नहीं करनी चाहिए।** दिमाग में न बैठे, तो भी इनकी आज्ञा और गौरव का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। अनेक संस्कारी कुलों में बड़ों की आज्ञा, वचनों की मर्यादा और संस्कारों को जीवन में उतारने वालों की पीढी दर पीढी सुखी हो जाती इसके विरुद्ध बड़ों की अवगणना-अविनय करने वालों की अनेक पीढ़ियां जीवन में हार पाती हैं। सावधान! कोई भी हितचिंतक बुजुर्ग आपके परिवार और घर के लिए वरदान है, वट वृक्ष की छाया है। उनको कभी नजर अन्दाज मत करना।

चित्रांगद आज मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसका मरणोत्तर कार्य करके छोटे भाई विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया। एक ही राजपरिवार में काशी नरेश की तीन पुत्रियों-अंबा, अंबालिका और अंबा के साथ उसका विवाह करवाया। माता सत्यवती के पुत्र और मेरे छोटे भाई विचित्रवीर्य ने राज्यधुरा का कुशलतापूर्वक संचालन किया, जिसमें नेतृत्व मेरा था। इससे प्रजा निश्चिन्त थी। राजा और प्रजा सुखमय जीवन जी रहे थे। पर मेरे नेतृत्व में निश्चिन्त विचित्रवीर्य अपनी रानियों में कामासक्त हो गया। अति कामुकता के कारण उसके शरीर पर असर दिखाई देने लगी। मैंने तुरन्त उसका ध्यान उस तरफ खींचा। माता सत्यवती का इशारा भी काम कर गया। बेशक! विचित्रवीर्य समझदार था।

उसकी तीनों रानियों के एक-एक पुत्र हुआ। माता सत्यवती की खुशी का पार ही नहीं था। वे अब दादी बन गयी थीं और मुझे मेरा फर्ज पूरा करने का संतोष था। अंबिका की कोख से धृतराष्ट्र ने जन्म लिया, जो जन्म से अंधा था। विचित्रवीर्य की कामांधता ने ही उसकी आँखों को अंधापन प्रदान किया था। अंबालिका ने पांडु को जन्म दिया। वह जन्म से पांडुरोगी था, अत: उसका नाम पांडु पड़ गया। विचित्रवीर्य की वासना ने यह कार्य किया था अंबा ने विदुर को जन्म दिया। तीनों ही राजपुत्र सभी तरह से पुण्यवान और भाग्यवान थे। किशोरावस्था में सफलतापूर्वक विद्याभ्यास करके यौवन के प्रांगण में प्रवेश किया।

इधर विचित्रवीर्य की वासना ने पुनः जोर पकड़ा। हमारा उपदेश तो वह भूल ही गया था, पर अब तो दिन और रात्रि का भी ख्याल नहीं रहा। राजरानियों का कहना भी नहीं माना। शरीर में खांसी,

श्वास और क्षय जैसे रोगों ने घेरा डाल दिया। शरीर-सौष्ठव और आरोग्य को खो बैठा। अति स्त्री-संगम के कारण वह परलोक सिधार गया। भोगों की अति ने उसका भोग ले लिया। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। सत्यवती सहित समस्त परिवार निराधार हो गया जवानी जीवन जीने के लिए होती है। पर वह तो जवानी में ही न चल बसा। **इसीलिए जैन शास्त्रों में श्रावक के लिए चतुर्थ अणुव्रत में परस्त्री-त्याग के साथ स्वस्त्री के विषय में भी संभव हो, उतनी मर्यादा एवं संयम रखने के लिए कहा गया है।** मनुष्य की पुण्य-शक्ति, शरीर-शक्ति और भोग-शक्ति सीमित होती है। डॉक्टर और वैद्य भी जितना हो सके, उतना संयम बरतने की सलाह देते हैं। ब्रह्मचर्य यानि सदाचार की चुस्त पालना। इसके द्वारा कितने ही महा-अनिष्टों से सुरक्षा होती देखी गयी है। ये हैं...

सेक्स एज्युकेशन सहशिक्षा टी.वी. के अश्लील दृश्य, चलचित्र, सीरियल, ब्ल्यू फिल्म्स, मोबाइल और नेट की गंदी तस्वीरें, गंदे खेल, गंदे मजाक, गंदी चेटिंग, उद्भट वेश और गुटखों की रसिकता वासना को भड़काती है। बस! यही भीष्म पितामह का भावभरा वंदन! मेरे जीवन का पूर्वार्द्ध पूर्ण हुआ। मेरे जीवन का उत्तरार्द्ध बाद में अन्तिम लेख में लिखकर मेरा पात्र पूर्ण हो जायेगा महाभारत के पात्रों का जन्म हो चुका है। हमें संक्षेप में महाभारत पढना है।

गम्मत के साथ ज्ञान

वहाँ क्या करते हैं?

पूज्य आचार्य श्री अजितशेखर सूरीश्वरजी म.सा.

छगन : मेरा चिंटू देश के सबसे बड़े मेडिकल कॉलेज के रिसर्च विभाग में है।

मगन : अच्छा !! वह क्या काम करता है?

छगन : रिसर्च सेंटर में रिसर्च करने वाले विद्यार्थी जो आधी जली सिगारेट, बिस्किट के पैकेट, रैपर आदि फेंक देते हैं, उन्हें उठाता है, सफाई कर्मचारी है यह।

चिंटू वैसे तो श्रेष्ठ कॉलेज में है, किन्तु वहाँ उसका कार्य क्या है, अतिशय निम्नस्तरीय कचरा उठाने का। आप कहाँ हैं इस बात से अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप वहाँ कर क्या रहे हैं। गिद्ध भी आकाश में बहुत ऊपर उड़ता है, किन्तु उसकी नजर किसे ढूंढती है? किसी मुर्दे को। कौआ किसी सुन्दर बाग में भी किसी कीड़े, मकोड़े और कॉकरोच को ही देखता है, और बगुला मान सरोवर में रहकर भी मछली का ही ध्यान धरता है।

हमें जन्म से जैनधर्म मिला, इस दुनिया का यह सर्वश्रेष्ठ धर्म कह सकते हैं, जिसकी दृष्टि में है अनेकान्त, जिसके चरण में है जीवदया और अहिंसा, हृदय में है मैत्री भाव और जिसके जीवन का आदर्श है अपरिग्रही साधु।

जन्म से ही ऐसा श्रेष्ठ धर्म मिला, अच्छी बात है, **किन्तु यह धर्म प्राप्त करके हम क्या कर रहे हैं - यह अधिक महत्त्वपूर्ण है?** यहाँ आकर भी यदि दूसरों की घटिया बातों पर ही अपना ध्यान होगा। तो यह कचरा बीनने का कार्य ही होगा। दूसरे के सुकृत में भी गलतियां ढूंढना वो बाग में गए कौए जैसा होगा। यदि पाप की बू से भरे अनीति और भ्रष्टाचार के कार्य करेंगे तो यह मान सरोवर के बगुले जैसा होगा। जैन धर्म प्राप्त करने के बाद भी अपनी विशेषता क्या रही?

• Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
• प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
• इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

7th JUNE 2020
Issue 02 • Part 02
BOOK 006

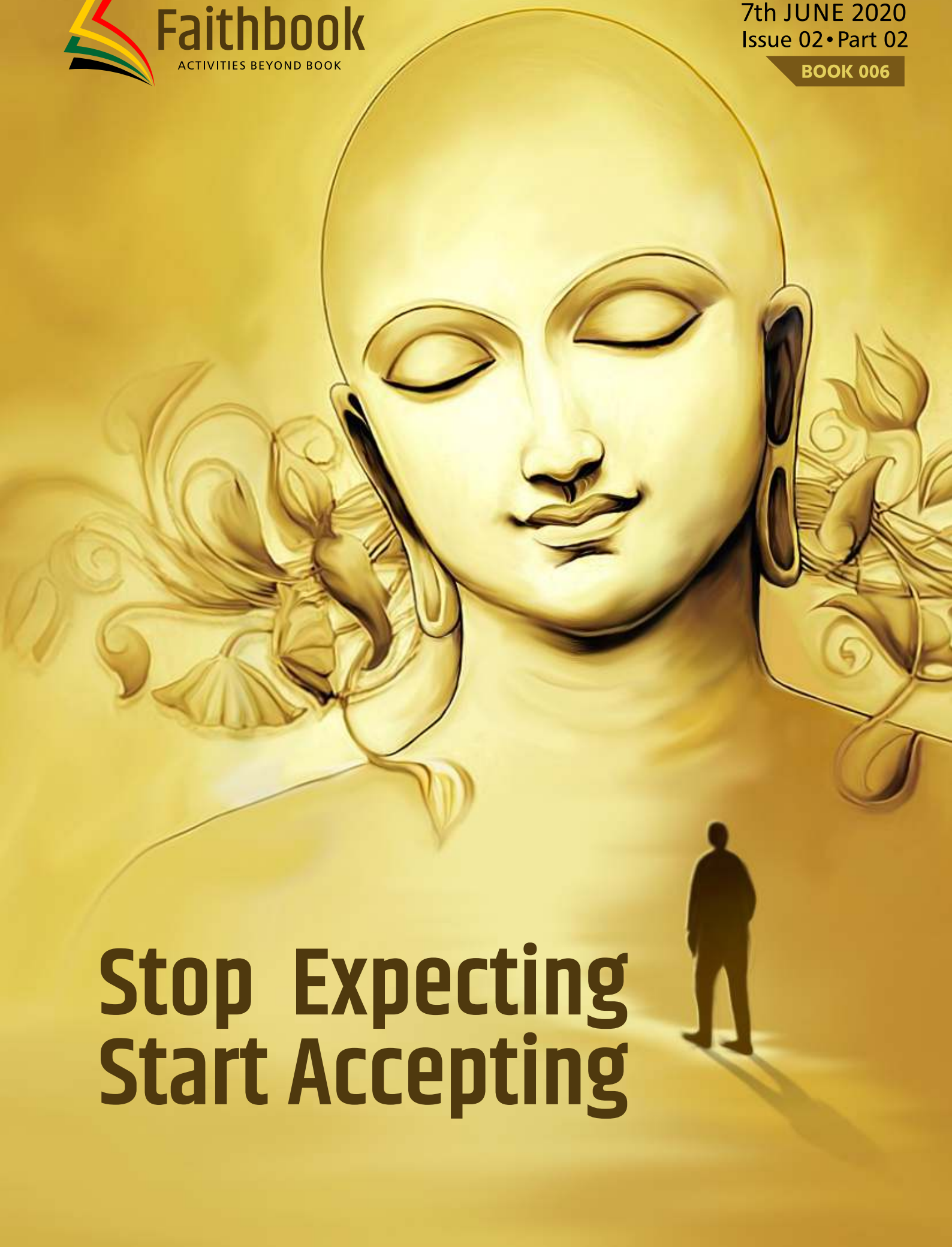

Stop Expecting Start Accepting

|| वंदामि जिणे चउव्वीसं ||

|| पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

प्रेरणा

पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक

नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook

शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी

VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm) Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

• लाभार्थी •

पू. मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. की प्रेरणा से

शारदाबेन रमणलाल शाह

ढुंढर – भायंदर

पू. मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा. की प्रेरणा से

कचरालाल मलुकचंद शाह

ढुंढर – भायंदर

namo nanassa

नमो नाणस्स

सादर प्रणाम,

विश्वश्रेष्ठ जिनशासन हमें मिला है। परंतु यह जिनशासन श्रुतज्ञान के बदौलत ही हमें प्राप्त हुआ है, और भविष्य में भव्यात्माओं को भी जिनशासन श्रुतज्ञान से ही प्राप्त होगा।

धर्म का मूल आधार ज्ञान है !
ज्ञान ही धर्ममहल को सलामत रखता है !!

आपकी आत्मा श्रुतज्ञान से परिप्लावित बने, आपका हृदय प्रभुवचनों से भावित बने, आपका मन सम्यक् ज्ञान से प्रकाशित बने। इस हेतु हमारा यह प्रयास है।

प्रभुवीर ने अंतिम देशमे फरमाते हुए पाप विपाक की कथा इस अंक में पूज्य गुरु भगवंत द्वारा प्रस्तुत की गई है।

तदुपरांत वर्तमान समस्या कोरोना एवं पारिवारिक प्रॉब्लम्स के विषय में तथा श्रमणी भगवंत की अनुमोदना करते हुए सुंदर लेख प्रस्तुत है।

आप पढ़े और सबको वाचन के लिए प्रेरित करें।

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Must Read

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit: **www.faithbook.in**

To Receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp. Please Message us on **81810 36036**

Click on below icons to Follow, Like & Subscribe : **FaithbookOnline**

All icons are Clickable

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

आगम कथा

मृगापुत्र कथा – 2

पूज्य आचार्य श्री महाबोधि सूरीश्वरजी महाराज

(भगवान महावीर मृगापुत्र का पूर्वजन्म बता रहे हैं।)

इसी जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में शतद्वार नामक समृद्ध नगर था। वहाँ धनपति नामक राजा राज्य करता था। इस नगर के निकट विजयवर्धमान नामक एक नगर था, वहाँ इक्काइ नामक राठौड़ (राजा द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि) राज्य करता था। उसके अधीन पांच सौ गांव थे। वह अत्यन्त अधर्मी था, और पाप करने में ही मौज का अनुभव करता था। उसने इस प्रकार के पापाचरण किए:

- अपने अधीन पांच सौ गांवों पर अत्यधिक कर लगाना।
- किसानों को कम पैसे देकर दोगुना अनाज लेना।
- रिश्वत देकर या अधिक ब्याज लेकर धन का संचय करना।
- लोगों पर हिंसा आदि के गलत इल्जाम लगाना।
- पैसे लेकर अयोग्य व्यक्ति को उच्च पद देना।
- चोरों को दण्ड न देकर उनका पालन करना।
- गाँव के गाँव जला देना
- राह चलते राहगिरो को सहायता करने की बजाय परेशान करना।
- लोगों को धर्म से विमुख करना।
- श्रीमन्तों को परेशान करके गरीब बनाना।
- बड़े लोगों के सामने वादा करके मुकर जाना।
- प्रजा को पीड़ा देने को ही कर्तव्य मानना।
- माया, झूठ प्रपंच का लगातार सेवन करना

ऐसे अनेक पाप करके अपनी आत्मा को कलुषित करते हुए इक्काइ अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। एक दिन उसके शरीर में एक साथ सोलह महारोग उत्पन्न हुए, जो इस प्रकार थे:

1. श्वास	2. खांसी	3. बुखार	4. दाह
5. कुक्षिशूल	6. भगंदर	7. मस्सा	8. अजीर्ण
9. दृष्टिशूल	10. मस्तकशूल	11. अरुचि	12. आँख की वेदना
13. कान की पीड़ा	14. खुजली	15. जलोदर	16. कुष्ठ

ये सोलह रोग भयानक, असाध्य और मृत्यु के समकक्ष थे। इक्काइ से ये रोग सहन नहीं हो रहे थे। उसने सेवकों को बुलाकर कहा, कि मेरे रोग दूर कर सके, ऐसे वैद्यों को बुलाकर मेरी चिकित्सा करवाओ। सोलह रोग भले ही दूर न कर सके, लेकिन एक रोग तो दूर करवाओ और ऐसी घोषणा करवाओ कि जो ये रोग दूर करेगा, उसे बहुत अधिक धन मिलेगा।

राजा की आज्ञा से सेवकों ने घोषणा करवाई। सुनकर अनेक वैद्य और वैद्यपुत्र उपचार करने के लिए आए, विविध प्रकार की औषधियाँ दी गई। अनेक प्रकार के चिकित्साकर्म किए गए। किन्तु सोलह में से एक भी रोग शान्त नहीं हुआ, अन्ततः सब लोग थक-हार कर चले गए।

शारीरिक वेदना से पीड़ित इक्काइ राजा ने अपने राज्य आदि पर अत्यधिक राग-मूर्छा की, और एक दिन उसकी मृत्यु हो गई। दो सौ पचास वर्ष की आयु पूर्ण करके वह रत्नप्रभा नामक पहली नरक में गया, और वहाँ घोर पीड़ा भोगकर अपना आयुष्य पूर्ण करके मृगारानी का पुत्र बना।

यह बालक जब से माता के गर्भ में था, तब से माता के शरीर में भी अनेक वेदनाएँ उत्पन्न हुई। इतना ही नहीं, वह राजा विजय की भी अप्रिय बन गई। इन कारणों से रानी ने गर्भ गिराने का निर्णय किया। इस हेतु उसने अनेक प्रयास किए, किन्तु सन्तान का आयुष्य प्रबल होने के कारण वह जीवित रहा।

बालक का जन्म हुआ, वह बहुत कुरूप था, इसलिए मृगा ने घाई को आदेश दिया, कि बच्चे को कचरे में फेंक दो। किन्तु चतुर घाई ने राजा को बता दिया। राजा स्वयं चलकर रानी के पास आया और कहा, "देवानुप्रिये ! यह तुम्हारा प्रथम गर्भ है। यदि इसे कचरे में फेंक दिया तो भावी प्रजा और सन्तति भी स्थिर नहीं रहेगी।" इसलिए रानी ने राजा की बात मानी और बालक को गुप्त रूप से पालने लगी।

गौतम ! पूर्व भव में बाँधे कर्मों का कटु विपाक इस भव में मृगापुत्र साक्षात् भोग रहा है।

मृगापुत्र का भूत और वर्तमान जानने के बाद गौतम स्वामी को मृगापुत्र का भविष्य जानने की जिज्ञासा हुई, इसलिए उन्होंने विनयपूर्वक प्रश्न किया।

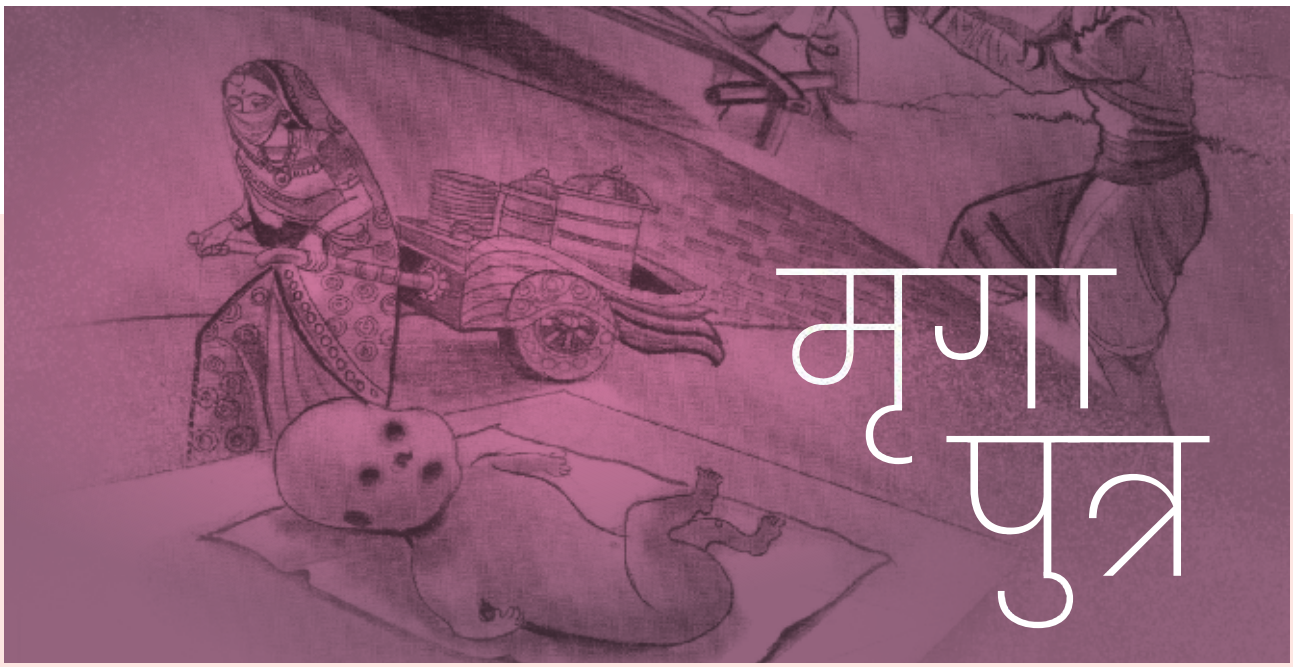

"प्रभु ! मृगापुत्र यहाँ से मृत्यु प्राप्त करके कहाँ उत्पन्न होगा?"

"गौतम ! मृगापुत्र इस भव में 26 वर्ष तक जिएगा, आयुष्य पूर्ण करके वह जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के वैताढ्यगिरि के तलहटी में सिंह के रूप में उत्पन्न होगा। सिंह के भव में अत्यन्त पाप करके वह घोर अशुभ कर्म बाँधेगा। वहाँ से मरकर पहली नरक में एक सागरोपम तक पीड़ा भोगकर सरीसृप (भुजा एवं छाती के बल चलने वाले पशु) की योनी में उत्पन्न होगा। वहाँ भी हिंसादि करके पापकर्म उपार्जित करेगा।

वहाँ से काल पूर्ण करके दूसरी नरक में तीन सागरोपम की पीड़ा भोगकर पक्षी योनी में उत्पन्न होगा। यहाँ भी अनेक कर्म बाँध कर तीसरी नरक में सात सागरोपम की पीड़ा भोगेगा। वहाँ से सिंह के भव में जन्म लेगा। सिंह के भव में अनेक जीवों को मारकर अशुभ कर्म बाँधते हुए चौथी नरक में उत्पन्न होगा।

नरक के घोर-अतिघोर दुःख सहन करके वहाँ से च्यवन करके सर्प के भव में उत्पन्न होगा। वहाँ भी अनेक पाप करके पांचवी नरक में जाएगा।

अनेक सागरोपम दुःख सहन करके यह मृगापुत्र काल करके स्त्री के रूप में उत्पन्न होगा। उस भव में अनेक प्रकार के विषय कषायों द्वारा क्लिष्ट कर्म बाँध कर वह छठी नरक में जाएगा।

वहाँ असह्य क्षेत्रज वेदनाएँ भोगकर वहाँ से निकल कर मनुष्य बनेगा। वहाँ भी पापकर्म करके सातवीं नरक में उत्पन्न होगा। सातवीं नरक के भयंकर दुःख भोगकर भी उसे छुटकारा नहीं मिलेगा। वहाँ से निकलकर जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच गति में मछली, मगर, ग्राह, सुंसुमार आदि जाति की समस्त योनियों और साढ़े बारह लाख कुल कोटियों में प्रत्येक में लाखों बार जन्म-मरण को प्राप्त करेगा।

इसी प्रकार चतुष्पद पशुओं में, उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प के रूप में, खेचर में, चउरिन्द्रिय, तेइन्द्रिय, बेइन्द्रिय में भी लाखों भव करेगा।

इसी प्रकार एकेन्द्रिय में वनस्पतिकाय, वायुकाय, तेउकाय, अप्काय और पृथ्वीकाय में भी प्रत्येक योनी में और प्रत्येक कुलकोटि में लाखों बार जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त करेगा।

इस प्रकार दीर्घकाल तक भव-भ्रमण करने के बाद मृगापुत्र की आत्मा, कुछ कर्म हल्के होने के कारण सुप्रतिष्ठपुर नामक नगर में एक बैल के रूप में उत्पन्न होगा। वर्षाऋतु के प्रारम्भ में वह गंगा नदी के किनारे वह जब मिट्टि खोद रहा होगा, वहीं गिरकर उसकी मृत्यु होगी। मरकर इसी नगर के श्रेष्ठी के घर पुत्र के रूप में जन्म लेगा।

उसका युवावस्था में पंचमहाव्रतधारी गुरु भगवंत के साथ संयोग होगा। उनके मुख से धर्म-श्रवण करके वह चारित्र अंगीकार करेगा। दीर्घकाल तक निरतिचार श्रमण जीवन का पालन करके अन्त में अतिचारों का आलोचन - प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक कालधर्म प्राप्त करके वह सौधर्म नामक प्रथम देवलोक में उत्पन्न होगा।

वहाँ से मृत्यु पाकर महाविदेह क्षेत्र में श्रीमन्त श्रेष्ठी के घर जन्म लेगा। वहाँ कलाभ्यास करके, चारित्र ग्रहण करके अन्त में सभी कर्मों का क्षय करके मोक्ष जाएगा।

मृगापुत्र के वर्तमान काल का दुःख, भूतकाल के पाप एवं भविष्य की दुर्गति का श्रवण करके राजा हस्तिपाल की शुल्कशाला में बैठी अपापापुरी की पापभीरु पर्षदा अधिक भीरु बनी।

SAVE FAMILY

परिवार में आनंद

" प्रियम् "

छगन के घर चोरी हुई, वह पुलिस में रिपोर्ट लिखवाने गया। पुलिस ने लिखते-लिखते पूछा, "क्या-क्या चोरी हुआ?" तो छगन बोला, "ज्वेलरी, पैसे, सीडी प्लेयर, मिक्सर, ग्राइंडर, फ्रिज, कपड़े, जूते, बर्तन, शो-पीस, डबल बेड, झुमर, कार्पेट ..." पुलिस हवलदार लिखते-लिखते परेशान हो गया और बोला, "शॉर्ट में लिखाओ।" तो छगन बोला, "टीवी को छोड़कर सब कुछ चोरी हो गया।" सुनकर पुलिस को दाल में कुछ काला लगा, उसने पूछा, "टीवी क्यों चोरी नहीं हुआ?" तो छगन बोला, "वो तो मैं देख रहा था।"

आज तो हर घर में ऐसी छगन कथा चल रही है। छगन की स्टोरी जैसी ही आपकी स्टोरी है। टीवी देखते-देखते या यूँ कहें, कि ऊपरी फेंटसी का मजा लेते-लेते आपका पूरा घर लुट रहा है, और आप टीवी देखने में मग्न हैं। यदि अपना घर बचाना है, तो इस So Called फेंटसी को ख़त्म कर दो।

आपके बच्चों को भी पता ना हो कि आप श्रीमन्त हैं, तभी आप सच्चे श्रीमन्त हो।

यदि आप बीमार पड़ें और घर के सब लोग अपना प्रोग्राम कैंसल कर दें, सब अपने फोन बन्द कर दें और दिन-रात आपकी की सेवा में जुट जाएँ, सच्ची फेंटसी तो यही है। आपका बेटा आपसे यह कहे कि, "भले ही भारत के सभी लड़के पढ़ने के लिए विदेश चले जाएँ, मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाने वाला" - यही सही मायने में फेंटसी है। आपकी बेटी आपसे कहे कि, "भले सोसाइटी की सारी लड़कियाँ वेस्टर्न एन्ड मोडर्न ड्रैस पहनती होंगी, किन्तु मैं यह पागलपन हरगिज नहीं करूँगी", सच्चे अर्थ में फेंटसी यही है। आपकी पत्नी आपसे यह कहे कि, "आप भले ही इससे आधे वेतन में काम करो तो चलेगा, किन्तु इतना बोझ लेकर काम करो, यह नहीं चलेगा, मुझे कुछ नहीं चाहिए" फेंटसी इसे कहते हैं। आपके बेटे की सगाई की बात चल रही हो, तकरीबन दोनों ओर से एक-दूसरे को पसन्द कर लिया हो, और अन्त में लड़की यह बोले कि, "मुझे अलग घर चाहिए" और आपका लड़का तुरन्त यह जवाब दे कि, "मैं अभी तुमसे अलग होता हूँ" - असली फेंटसी यही है। आप खाना खाने बैठे हो, आपका बेटा और बहू खाना परोस रहे हो, और बहू कहे, "पापा ! एक रोटी और लीजिए, एकदम गर्मागर्म है, आप तो कुछ खाते ही नहीं।" और अन्दर रूम से आपकी श्रीमती बोले, "तुम लोग इतना आग्रह करके रोज इनको ज्यादा खिला देते हो, फिर इनकी तबीयत ख़राब हो जाएगी तो!! अब ज्यादा मनुहार मत करो" सच्ची फेंटसी यह है। अपनी सारी सम्पत्ति बेटे के नाम करने वाला वसियत नामा बनाकर आप अपने बेटे के हाथ में सौंपो, और आपका बेटा फफक-फफक कर रोने लगे और उस वसियत नामा के कागजात को बॉल बनाकर फेंक दे, इसे सच्ची फेंटसी कहेंगे। आपकी बेटी के ससुराल से फोन आए, कि आपने अपनी बेटी को 'देवी' बनाकर भेजा था, अब तो ये हमारी 'इष्ट कुल देवी' बन गई है, फेंटसी इसे कहते हैं। आपके बेटे और बहू का विनय व्यवहार देखकर आपके पोते-

Save Family

पोती बिना सिखाए यह समझ जाएँ, कि आप ही इस घर के भगवान हैं, सच्ची फेंटसी यह है। कोई अरबपति भी यदि आपके घर 10-15 मिनिट के लिए भी आए और उसे लगे कि आपके घर में प्रेम और शान्ति की सम्पत्ति के सामने मैं तो भिखारी हूँ, सच्ची फेंटसी यह है।

I ask you, आपको सच्ची फेंटसी चाहिए? यदि हाँ, तो झूठी फेंटसी छोड़ दीजिए। यदि आपको दोनों चाहिए, तो यह कदापि सम्भव नहीं है। पूरी जिन्दगी आप झूठी फेंटसी के पीछे भागते रहे, और साथ ही इस बात का रोना रोज रोते रहे, कि घर में आपकी किसी को पड़ी नहीं है, तो ये पागलपन आज ही छोड़ दीजिए।

2. Artistry :

Family शब्द का दूसरा अक्षर है A, और यहाँ A Stands for Artistry. यानी कला-कौशल्य। आर्टिस्ट्री दो प्रकार की होती है, सच्ची और बनावटी।

छगन की पत्नी ने अपनी बेटी को धमकाते हुए डाँटा, "ऐसे पागलों की तरह क्यों चीख-चिल्ला रही है? तूं क्या बोल रही है, तुझे खुद को भी पता चल रहा है? इतनी जोर से आवाज? इतनी तेज शब्दों की बौछार? क्या है ये सब? अपने भाई को देख! कितना चुपचाप बैठा है। एक शब्द भी नहीं बोल रहा।" बेटी ने जवाब दिया," मम्मी! हम तो घर-घर खल रहे हैं। भाई पप्पा का रोल प्ले कर रहा है, और मैं आपका ...।"

छगन ने एक बार अपने बेटे से पूछा, " बता! गन और मशीनगन में क्या फर्क है?"
बेटे ने तुरन्त जवाब दिया, " पप्पा! आप बोलते हैं वह गन है, और मम्मी बोलती है वह मशीनगन है।"

आर्टिस्ट्री हम सब में है, किन्तु लाख रुपयों का प्रश्न यह है कि हमारे अन्दर किस प्रकार की आर्टिस्ट्री है? और किस प्रकार की होनी चाहिए?

कुछ स्त्रियाँ अपनी जीभ से अपने ही संसार की कब्र खोदती हैं, कुछ स्त्रियों की लम्बी जीभ से उनके पति का जीवन छोटा हो जाता है, तो कुछ पतियों का मौन टूटते ही उनका संसार टूट जाता है। कुछ संतानें गाय का आँचल (थन) काट कर दूध प्राप्त करना चाहती हैं, तो कुछ माँ-बाप सुख और सुख के श्रेष्ठ साधनों से अपनी सन्तानों का सत्यानाश कर देते हैं।

बिना किसी कारण या किसी छोटे से कारण से झगड़ा करना भी एक कला है। किसी कारणवश यदि घर में माहौल थोड़ा टेंशन वाला हो जाए तो उस टेंशन को सौगुना बढ़ा देना भी एक कला है। सामने वाले व्यक्ति के हृदय में अपना सम्मान 50% तक पहुँच गया हो, तो -50% तक उसका अवमूल्यन करना भी एक कला है। अपने सिर में दर्द हो रहा हो, इस कारण घर के सभी लोगों के लिए सिरदर्द बन जाना भी एक कला है। हम घर में प्रवेश करें, उस समय घर के सब लोग इस ताक में हों कि कब हम घर से वापिस बाहर जाएँगे, ऐसा वातावरण बनाना भी एक कला है।

उपरोक्त सभी उदाहरण कला-कौशल्य के ही भाग हैं, किन्तु यह सब नेगेटिव आर्टिस्ट्री हैं। यदि आपको फैमिली को बचाना है तो पॉजिटिव आर्टिस्ट्री सीखनी होगी।

स्वीटू की माँ का देहान्त हो गया तो उसके पिता ने दूसरी शादी की। पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने स्वीटू को समझाया कि, " सौतेली माँ से सावधान रहना। वह तुझे मारेगी, डाँटेगी और जीना हराम कर देगी। वह तुझसे सच्चा प्रेम कभी नहीं करेगी। "

स्वीटू के मन में यह बात घर कर गई। लेकिन उसकी सौतेली माँ अच्छी थी। वह स्वीटू को सच्चा वात्सल्य देती थी, उसका ध्यान रखती थी, लेकिन स्वीटू को यह सब नेगेटिव लगता था। वह अपनी सौतेली माँ से अविनय करता, उसके मुँह पर सब कुछ सुना देता " तू मेरी माँ नहीं है, तुझे मुझसे सच्चा प्रेम नहीं है " और उसका दिल तोड़ देता। वह बेचारी अकेले में रोकर अपना दिल हल्का कर लेती थी।

एक दिन बॉल खेलते हुए पिता द्वारा लाया हुआ ताजमहल का महँगा शो-पीस स्वीटू से टूट गया। स्वीटू तो डर गया। पप्पा ऑफिस से आए। स्वीटू डर के मारे किचन में छिप गया और गेट के कोने में खड़ा होकर देखने लगा। पप्पा सोफे पर बैठे, टेबल पर देखा तो शो-पीस गायब था। उन्होंने पूछा, "ताजमहल कहाँ गया? "

स्वीटू की धड़कनें एक्सप्रेस ट्रेन की तरह दौड़ने लगी। वह सोचने लगा कि मेरी सौतेली माँ सब कुछ बता देगी और पप्पा मेरी धुलाई कर देंगे। डर के मारे वह कांपने लगा। उधर सौतेली माँ बोली, " साफ-सफाई करते हुए मुझसे टूट गया। " सुन कर पप्पा का गुस्सा सातवें आसमान को छू गया। उन्होंने

आव देखा न ताव, पेपर-वेट उठाकर सीधे मम्मी के सर पर मारा और गुस्से में घर से बाहर निकल गए।

स्वीटू दौड़कर आया और माँ के गले लग गया और जोर-जोर से रोने लगा, " तू ही मेरी सच्ची माँ है। तू मुझसे सच्चा प्रेम करती है।" फिर स्वीटू ने अपने हाथों से माँ के घाव पर मरहम लगाया, पट्टी की। उसकी माँ मुस्कुरा रही थी। इस एक आर्टिस्ट्री ने उसे जीवन भर का सुख दे दिया था।

कुछ सत्यवादी अपने 'सत्य' के 'बम्ब' से पूरे घर का सत्यानाश कर देते हैं। जबकि इन्हीं सत्यवादियों को बिजनेस या जॉब में झूठ बोलने की आर्टिस्ट्री नहीं सीखनी पड़ती। I ask you, यदि बाहर आर्टिस्ट्री नहीं आती हो, तो Maximum कितना लॉस होगा? और घर में आर्टिस्ट्री नहीं आती हो तो Minimum कितना लॉस होगा? शान्ति से विचार करेंगे तो आपको महसूस होगा कि आप टॉप क्लास के स्टुपिड हैं।

मुझे वह कविता याद आती है:

रंग है, तरंग है, अँगूठी के संग है_
नौ ग्रहों के नंग हैं, फिर भी जीवन तंग है।

आपकी यह इच्छा है कि आपका बेटा किसी पार्टी या विशेष प्रसंग में भी चौविहार का नियम न तोड़े। अब वह किसी बर्थ-डे पार्टी में जाकर आया, और आपको पता चला कि उसने वहाँ रात्रि भोजन किया है। नॉर्मली ऐसी स्थिति में आप उस पर बुरी तरह से टूट पड़ते हैं। किन्तु आपको समझदारी रखनी है। दूसरे दिन आप उसके लिए एक गिफ्रट लाइये और घर के सभी सदस्यों के सामने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहिये कि, " दीप ने ऐसी पार्टी में जाकर भी अपना सत्त्व बरकरार रखा। जब सब लोग केक खा रहे थे, तब भी उसने अपना चौविहार अखण्ड रखा, यह करना कितना मुश्किल काम होता है? मेरी वर्षों की भावना का दीप ने मान बनाए रखा है। इसने तो आज हमारा स्टेटस बढ़ा दिया, I am proud of my son, well done!! "

दीप तुरन्त ही, अन्यथा उसी दिन भीगी पलकों से आपके पैरों में गिर कर माफी माँगेगा, और कहेगा, " पप्पा! मैंने रात्रि भोजन किया है, किन्तु आगे से मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। भले कितना ही बड़ा व हाईफाई इवेंट क्यों न हो, किन्तु मैं रात को नहीं खाऊँगा। "

May be आपका दीप इस तरह न भी सुधरे, may be उसे सुधारने की गिफ्रट कुछ डिफरेंट हो, किन्तु आप बस एक बात का जवाब दीजिए- जब आप उसे सुधारने का प्रयास करते हैं तब 'उसके' स्वभाव को समझकर 'उसके' स्वभाव के अनुसार उसे सुधारते हैं? या आप 'अपने' स्वभाव के अनुसार उसे सुधार रहे हैं? जब आप उसे उसके स्वभाव के अनुसार सुधारने की परवाह किए बिना अपने ही अनुसार उसे सुधारने की कोशिश करते हैं, तो हकीकत में आप उसे बिगाड़ रहे हैं।

प्रेम और वात्सल्य जताने की भी एक आर्टिस्ट्री होती है, और थप्पड़ मारने की भी एक आर्टिस्ट्री होती है। बिना आर्टिस्ट्री के आँख बन्द करके कोई भी कार्य करना जोखिम भरा हो सकता है।

(क्रमशः)

कोरोना वैक्सीन का सच

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

कोरोना वायरस से भी ज्यादा खतरनाक एवं हिंसक उन्हें मिटाने के नाम पर बनाया टीका होगा।

कुछ लोग ऐसा दावा कर रहे हैं कि, कोरोना के सामने लड़ने में श्रेष्ठ शस्त्र उनका टीका (Vaccine) होगा। बिल गेट्स जैसे वैक्सीन के धुर प्रचारक तो यहाँ तक कह रहे हैं कि, जब तक कोरोना का टीका बाजार में न आ जाये, तब तक दुनिया के सभी देश लॉकडाऊन में ही रहें। यदि कोरोना का टीका बाजार में आ जाये तो भारत समेत विविध देशों की सरकारें वो वैक्सीन जबरदस्ती देने के लिए कानुन भी बना सकती है। यह कानुन में टीका नहीं लगवाने वालों को सरकारी सहायता ना देने का और शायद जेल में भरने का प्रावधान भी हो सकता है। वर्तमान में पोलियो, चेचक, चिकनपॉक्स, नूरबीबी, रूबेला इत्यादि के टीके जिस तरह तैयार किए जाते हैं, उन्हें देखते हुए यह कहने का मन हो रहा है कि, टीका ग्रहण को अनिवार्य करने वाला कानून भारत के हिन्दू एवं जैन धर्मावलम्बीयों की धार्मिक आस्था पर एक अजीब किस्म का आक्रमण होगा..... क्योंकि जितने भी वैक्सीन आ चुके हैं,इन सबमें मांसाहारी पदार्थों का प्रयोग किया जाता है और कुछ वैक्सीन्स तो गर्भपात किए शिशु के देह में से बनाई जाती है। कोई भी रोग के वैक्सीन (टीका) बनाते वक्त, उसमें उन रोग के जीवित वायरस का उपयोग किया जाता है। लैब (प्रयोगशाला) में वायरस को पनपने के लिए कोई न कोई माध्यम की आवश्यकता रहती है। कुछ वैक्सीन, पशुओं के खुन को माध्यम के रूप में इस्तेमाल करके बनाई जाती हैं तो कुछ वैक्सीन गर्भपात किए गए भ्रूण को माध्यम बनाकर तैयार की जाती है।

पोलियो की वैक्सीन बनाने के लिए, एम.आर.सी.-5 नामक ह्युमन सेल लाईन का उपयोग किया जाता है। एम.आर. की वैक्सीन बनाने के लिए आर.ए.-27/3 और WI-13 ह्युमन सेल लाईन का उपयोग किया जाता है।

थोड़े साल पहले भारत में हैपेटाइटीस-A और B की वैक्सीन का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ था। इस वैक्सीन की पैकिंग के साथ जो इन्सर्ट आता है, उसमें उसके निर्माण घटक की सूची भी दी जाती है। उसमें इन चीजों का- फोर्मेलिन, यिस्ट प्रोटीन, एल्युमिनियम फोस्फेट, एल्युमिनियम हाइड्रोक्साइड, अमाइनो एसिड, फोस्फेट बफर पोलिसोर्बेट, नियोमाइसिन सल्फेट एवं ह्युमन डिप्लोइड सेल्स का भी अन्तर्निवेश पाया जाता है, जिसमें से ह्युमन डिप्लोइड सेल्स को मनुष्य देह में से प्राप्त किया जाता है। टीका बनाने वाली कंपनियाँ अक्सर गर्भपात करने वाली क्लिनिक के संपर्क में रहती है। वे लोग जिस बच्चे की गर्भ में हत्या करते हैं, उनके शरीर को आइसबॉक्स में रखकर वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों की लैब में पहुँचा देते हैं। बाद में उसका उपयोग वायरस को पनपने के लिए माध्यम के रुप में किया जाता है। गर्भपात करने वाली इकाइयों की मुख्य कमाई ऐसे मृतदेहों का व्यापार है।

गुजरात में कुछ साल पहले विद्यालय में अध्ययनरत तमाम विद्यार्थीयों को MR-वैक्सीन (टीका) अनिवार्य कह कर दी थी, मगर हकीकत में वो स्वैच्छिक थी। सरकारी संसाधन एवं बल का उपयोग विद्यालयस्थ करोड़ों बच्चों को टीका लगाने में किया गया था। गांधीनगर के नजदीक स्थित एक जैन छात्रावास सह विद्यालय में आरोग्य विभाग के अफसर टीका लगाने हेतु अपने काफिले के साथ पहुँच गये थे। इन छात्रावास में बच्चों को प्रवचन देने के लिए आये हुए जैनाचार्य को जानकारी थी कि वैक्सीन निर्माण में मानव भ्रूण का उपयोग किया गया है। इन वैक्सीन के पैकिंग पर ही इन चीजों का निर्देश किया जाता है। जैनाचार्य ने उन आरोग्य विभाग के अफसर को बताया कि, हम धार्मिक कारणों से बच्चों को यह टीका लगवाना नहीं चाहते हैं। अधिकारियों के अत्यधिक आग्रह (दबाव) पर आचार्य श्री ने कहा कि, आप हमें लिखित में गारण्टी दो कि इस टीके (वैक्सीन) में कोई भी हिंसक पदार्थ का उपयोग नहीं किया गया है।'

आरोग्य विभाग के अफसर बिना वैक्सीन लगाये ही वहाँ से विदा हो गये थे।

नाबालिग हो चाहे बालिग, किसी भी उम्र के पड़ाव पर शरीर में वैक्सीन के माध्यम से अन्य मनुष्यों के डी.एन.ए. घुसाने के कारण अनेक विकृतियाँ पैदा हो सकती है। एक मनुष्य के शरीर में, अन्य मनुष्य के डी.एन.ए. घुसाने से उसका म्यूटेशन (परिवर्तन) होता है, जिसके कारण टीका लेने वाले इन्सान को कैन्सर जैसे रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। वैक्सीन के कारण बच्चों की जो रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युइन सिस्टम) होती है वह ओटो इम्युन प्रकार के रोग पैदा कर सकती है।

वर्तमान में कोरोना वायरस की वैक्सीन बनाने के लिए जो प्रयोग चल रहे हैं, उसमें भी पहले वैक्सीन बनाने हेतु मानव भ्रूण का, कुत्ते का या घोड़े का उपयोग किया जायेगा। यदि शाकाहारी लोगों को यह टीका लगवाने के लिए जबरदस्ती की जाएगी तो उनके ऊपर धर्मभ्रष्ट होने की आफत मंडरा रही है।

मीडिया के द्वारा कोरोना वायरस का इतना ज्यादा भय फैला दिया गया है कि दुनिया के कुछ भोले-भाले लोग कोरोना की वैक्सीन (टीका) आने का

इंतजार करने लगे हैं,कि कब बाजार में वैक्सीन आयेगी? मगर वैक्सीन का एक काला सच यह भी है कि, जिस रोग की वैक्सीन ली जाती है, वह रोग ना हो तो, स्वस्थ इंसान भी उस रोगों का शिकार बन सकता है, वैक्सीन के कारण ही....

दुनिया में जब से वैक्सीन की शुरुआत हुई है, तब से उनके हेतु एवं उद्देश्य संदेह के दायरे में है। वैक्सीन हमें रोगों से कितना सुरक्षित रख सकते हैं, यह विवादास्पद है।

सन्-1796 में इंग्लैण्ड के डॉक्टर एडवर्ड जेनर ने चेचक का टीका खोजा था। उन्होंने यह टीका सबसे पहले अपने बेटे रोबर्ट को लगाया था। टीका लेने के कारण रोबर्ट के दिमाग को बड़ी क्षति पहुँची और वह मंदअक्ल हो गया। रोबर्ट सिर्फ 21 साल की उम्र में ही टी.बी.का शिकार होकर मर गया। इंग्लैण्ड के निवासियों को जब पता चला कि जेनर का बेटा वैक्सीन के ज़हर से मारा गया है, तब से इंग्लैण्ड में वैक्सीन विरोधी गुट खड़ा हुआ है। आज उनका आंदोलन दुनिया के अनेक देशों तक पहुंच गया है।

अमरीका के करोड़ों लोग सामान्य फ्लू का टीका लेते हैं। यह वैक्सीन गर्भवती महिलाओं को भी दी जाती है। अमरीका के CDC (Centre for Disease Control) के द्वारा इस वैक्सीन को अनुमति देते वक्त, इस वैक्सीन से गर्भ पर क्या असर होगी, वह जाँचा ही नहीं गया था। फ्लू का टीका लेने के पश्चात् कई सारी महिलाओं को मरे हुए बच्चे पैदा होने लगे (मीसकरेज) या गर्भपात होने लगा तब जाँच करने पर पता लगा कि इसका कारण फ्लू का टीका था।

जब एक गैरसरकारी संस्था के द्वारा सर्वे किया गया तब पता चला कि यदि कोई गर्भवती महिला फ्लू का टीका लेती है तब गर्भपात की संभावना 4,250 प्रतिशत बढ़ जाती है। **COVID-19 भी एक प्रकार का फ्लू है। अब तो यह भी सिद्ध हो चुका है कि कोरोना का मृत्यु दर भी फ्लू जितना ही है।** यदि गर्भवती महिलाएँ कोरोना की वैक्सीन लेगी तो उनके गर्भ को क्षति पहुंचे बिना नहीं रहेगी।

संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा कैन्या की 23 लाख महिलाओं को टीटनेस का टीका दिया गया था। इस टीका का क्या परिणाम आया होगा? वो निश्चित करने के लिए डॉ. वाहोमनगारे नामक डॉक्टर को जिम्मेदारी सौंपी गई थी। उसने ढूंढ निकाला कि, टीका में महिलाओं की फर्टीलीटी (उत्पादन क्षमता) कम करने वाला हॉर्मोन डाला गया था।

अमरीका के कानुन के मुताबिक हर बच्चे को उसकी पाँच साल की उम्र तक 27 प्रकार की

वैक्सीन लेनी अनिवार्य हैं। अमरीकन बच्चे को सन् - 1962 तक सिर्फ 3 प्रकार की और सन्-1983 तक 12 प्रकार की वैक्सीन ही लेनी पड़ती थी। बच्चों को जैसे-जैसे वैक्सीन देने का प्रमाण बढ़ता गया, वैसे-वैसे उनमें गंभीर रोगों का प्रमाण भी बढ़ता गया। 1980 में अमरीका में हर 10,000 बच्चों में से एक बच्चा ओटिज़म का शिकार बनता था, और सन्-2017 में हर 36 बच्चों में से एक बच्चा ओटिज़म (मेन्टली डिसऑर्डर एण्ड अदर प्रोब्लम्स) का शिकार बन रहा था, जिसके लिए सिर्फ वैक्सीनेशन का बढ़ता दायरा जिम्मेदार था।

विविध रोगों की वैक्सीन बनाने के लिए जिन-जिन चीजों का इस्तेमाल किया जाता रहा है, उनकी सूची पढ़ने पर पता चलता है कि, ऐसे जहरीले पदार्थ अपने शरीर में डालने के लिए हम कभी भी तैयार नहीं होंगे।

सेवाभावी लोग अपने रक्त का दान करते हैं, उसमें से प्लाज्मा अलग करके, ब्लडबैंक (कई सारी ब्लड बैंक) वैक्सीन बनाने वाली कंपनीयों को बेचकर कमाई करती हैं।

पूरा लेख पढ़ने के बाद पाठकों के लिए कुछ प्रश्न है,

1. जिस कोरोना की इतनी हाय तौबा मची है, उसके मरीज़ की संख्या भारत जैसे राष्ट्र में 1 लाख नागरिक में सिर्फ 7 की है (मृत्यु प्राप्त की तो इससे कम ही है) तो कोरोना महामारी कैसे ?

2. कोरोना ग्रसित मरीज बिना दवाई ही (86%) अच्छे हो रहे हैं तो टीका लेने की क्या आवश्यकता है?

3. वैक्सीन लेने वाले 60% ऐसे होते हैं, जिसे वह रोग वापिस हो सकता है, तो वैक्सीन लेने का क्या फायदा?

4. विश्व मैं लाखों प्रकार के वायरस आज भी विद्यमान है, हम कितनी वैक्सीन लेंगे ?

5. वैक्सीन लेने के बाद यदि वैक्सीन से ही हानि होती है तो भी आप उन कंपनियों के सामने कभी केस नहीं कर सकते ऐसा कानून होने पर हम क्या करेंगे ? क्योंकि उसमें वर्तमान स्थिति ऐसी ही है।

6. महाराणा प्रताप ने कितनी वैक्सीन ली होगी, जिससे उनका शरीर इतना सुदृढ़ था ?

7. प्राणियों पर अत्यधिक अत्याचार करके बनाई वैक्सीन हमें कैसे स्वास्थ्य देगी ? शायद इन प्रश्नों का भगवान ही जवाब दे पाएंगे, भगवान को पूछे...

खुले दिमाग से लेख पढ़ने के बाद यदि प्रश्न हो तो इस नंबर पर संपर्क कर सकते हो 9166568636

आधारभूत जानकारी प्रदाता - श्री संजयभाई वोरा

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम् ।

www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

14th JUNE 2020
Issue 02 • Part 03
BOOK 007

FATHERS ARE JUST LIKE COCONUTS

Hard on Outside but Soft & Sweet from Inside

HAPPY FATHERS DAY

|| वंदामि जिणे चउव्वीसं ||

|| पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

प्रेरणा

पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक

नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook

शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट

C/O विपुलभाई झवेरी

VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm) Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

• लाभार्थी •

पू. मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. की प्रेरणा से

प्रेमीलाबेन कचरालाल शाह

ढुंढर - भायंदर

पू. मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा. की प्रेरणा से

कचरालाल मलुकचंद शाह

ढुंढर - भायंदर

नाणं पयासगं

सादर प्रणाम,

सदीयोंसे चलता आया ज्ञानप्रवाह हमारा बहुत बडा उपकारी है! और उसी को अविरत चलाने की दिशामें आज दुसरे अंक का तीसरा भाग आपके सामने प्रस्तुत है!

जीवन में आचारों का और सहीष्णुता का महत्व दर्शाता लेख निश्चित ही सबके लिए प्रेरणादायी होगा ! वीसस्थानक के सिद्ध पद की विशेषता इस भाग में हम जानेंगे! और श्रमणी भगवंतो के अद्भुत जीवनदर्शन, परम उपकारी पिता के प्रेम पर विशेष आलेखन पाठकों के लिए मार्गदर्शक होगा!

हमारा यह सम्यक् ज्ञान का प्रयास तब सफल होगा। जब आप इस नॉलेज बुक का वाचन, चिंतन और मनन करेंगे एवं सब को यह सम्यक् ज्ञान के लिए प्रेरित करेंगे।

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Must Read

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit: **www.faithbook.in**

To Receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp. Please Message us on **81810 36036**

Click on below icons to Follow, Like & Subscribe : **FaithbookOnline**

All icons are Clickable

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

Happy Father's Day

स्नेह, सत्व और सहिष्णुता का संगम : पिता

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

माता-पिता के प्रेम का मूल्यांकन करना हमारे बस की बात नहीं है। जिस प्रकार हमारी दोनों आँखों का महत्त्व एक समान है, उसी प्रकार माता और पिता की महिमा भी एक सरीखी है, इसमें तुलना करना सम्भव नहीं है।

माता की तरह पिता भी हमें बहुत प्रेम करते हैं। माता का प्रेम मिठाई जैसा होता है, तो पिता का प्रेम रेपर में पैक किए गिफ्ट जैसा होता है, उसे खोलने के बाद ही पता चलता है, कि हमें क्या मिला?
माता की गोद उपवन जैसी है, तो पिता का कन्धा स्कूल जैसा है।
माता की गोद कुल की परम्परा सिखाती है, तो पिता का कन्धा स्वाभिमान सिखाता है।
माता की गोद में प्रेम मिलता है, तो पिता के कन्धे पर सुकून मिलता है।
माता हमें हृदय से लगाती है, तो पिता हमें पीठ पर बिठाते हैं।
माता हमें जीवन देती है, तो पिता हमें जीना सिखाते हैं।
माता हमें चरण देती है, तो पिता हमें चलना सिखाते हैं।
माता हमें जमाने की नजरों से बचाती है, तो पिता हमें सहनशीलता सिखाते हैं।
माता हमारा अस्तित्व है, तो पिता हमारे अस्तित्व की पहचान है।

माता और पिता की अपनी-अपनी मौलिक विशेषताएँ हैं। सन्तान अपने नाम के पीछे पिता का नाम जोड़ते हैं, और गर्व महसूस करते हैं, कि मैं इनकी सन्तान हूँ। पिता इस संसार से चले भी गए हों, फिर भी पिता का नाम इतना शक्तिशाली होता है कि जिस पर पुत्र गौरव के साथ मस्तक उठाकर चल सकता है।

सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के प्रमुख का पद सेठ शान्तिदास झवेरी के वारिस के हाथों में आता रहा है। जब – जब नए प्रमुख ने जैसे ही पद भार सम्भाला, तो वे भी अपने पूर्वजों की गौरव गाथा गाते नहीं थके।

जैसे 'मातृत्व' की 'महिमा' होती है, वैसे ही 'पितृत्व' का 'गौरव' होता है। मात्र पुत्र ही नहीं बेटियाँ भी पिता से गौरवमयी हुई हैं। द्रुपद राजा से द्रौपदी, जनक राजा से जानकी आदि।

माता का 'म' अर्थात् ममता, और पिता का 'प' अर्थात् प्रेम; और पिता का यह प्रेम कभी-कभी तो माँ की ममता से भी आगे बढ़ जाता है।

रानी चेल्लणा ने पुत्र को जन्म दिया, लेकिन गर्भकाल में अशुभ मनोरथ उत्पन्न होने के कारण उसे जन्म के तुरन्त बाद ही दासी के हाथों कचरे में फिकवा दिया। लेकिन पिता श्रेणिक राजा ने स्वयं कचरे के ढेर से अपने रोते हुए पुत्र को उठा लिया। बच्चे के हाथ की उंगली मुर्गे द्वारा उठाए जाने पर उसमें से खून और मवाद निकल रहा था, फिर भी उसे चूस कर उसकी पीड़ा शान्त करने का प्रयास किया।

उसी पुत्र कोणिक ने बड़े होने पर सत्ता की लालच में अपने पिता श्रेणिक को जेल में डाल दिया। एक बार माता के मुख, उसने जब अपने बचपन का यह वाकया सुना तो उसे अपनी भूल महसूस हुई। पिता को जेल से छुड़ाने के लिए भागा, चाबी नहीं मिली तो मोटा हथौड़ा लेकर गया।

पुत्र के हाथ में हथौड़ा देखा, तो पिता श्रेणिक ने सोचा, "ये तो मुझे आज मारने आ रहा है, वैसे भी मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ, आज नहीं तो कल मरने ही वाला हूँ, तो मेरे बेटे के सर पर 'पितृ-हत्या' का कलंक क्यों लगने दूं ?" यह सोचकर श्रेणिक ने अपने हाथ में पहनी जहरीली अंगूठी चूसकर मृत्यु का वरण किया।

एक बार अपने पुत्र की अंगुली चूसकर, और दूसरी बार अपनी विषैली अंगूठी चूसकर श्रेणिक राजा ने उच्च कोटि का पितृ-प्रेम का सन्देश दिया।

धर्म जगत का भी एक दृष्टान्त है, आचार्य श्री शय्यंभवसूरि ने अपने पुत्र मुनि मनक के आत्मकल्याण के लिए 14 पूर्वों में से चुनिन्दा श्लोक लेकर 'श्री दशवैकालिक सूत्र' की रचना की, और यह साबित किया कि पिता के हृदय में भी लबालब प्रेम भरा होता है।

पिता के लिए अंग्रेजी में FATHER शब्द दिया गया है। तो आइए, इसके एक-एक Letter से पिता को समझने का प्रयास करें :

• F - Friend

हमारे साथ खेलने बैठते हैं, और फिर झूठे-झूठे हार जाते हैं, और हमें जीत दिलाकर खुश हो जाते हैं। हमारी उम्र के न होने पर भी वे हमारे साथ खेलते हैं, मजाक-मस्ती करते हैं, और फिर कहते हैं 'रिश्ते में तो हम तुम्हारे बाप लगते हैं।

' पिता के संग मित्रता के साथ आनन्दपूर्वक बिताए हुए वो दिन जब याद आते हैं तो हमारे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। याद आता है, कि जब पिता रसोई बनाए तो मम्मी के हाथ के खाने से उसकी तुलना करके तारीफ (?) करने का मजा ही कुछ और होता था। और यह Friendly मस्ती तो पूरे जीवन की यादगार पल बन जाती है।

• A - Anchor

पिता की उपस्थिति में सुरक्षा अनुभव होती है। छोटे-छोटे कष्ट तो माँ ठीक कर देगी, इस बात का हमें भरोसा होता है, इसीलिए छोटी चोट लगते ही 'ओ माँ' ऐसे शब्द निकलते हैं। लेकिन यदि अचानक दुःखों का पहाड़ टूट पड़े तो 'अरे ! बाप रे' बोलते हुए हमें पिता ही याद आते हैं। **पिता उंगली पकड़े बच्चों का सहारा है, पिता कभी खट्टा तो कभी खारा है। पिता से ही बच्चों के ढेर से सपने हैं, पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।**

पिता सुरक्षा है, अगर जिस पर हाथ है, पिता नहीं तो बचपन अनाथ है।

• T - Teacher

राजा ऋषभ स्वयं शिक्षक बनकर अपनी प्यारी दोनों बेटियों को पाठ सिखाते थे। पहली बेटी 'ब्राह्मी' को लिपि का ज्ञान दिया, और फिर लिपि का नामकरण भी बेटी के नाम से किया। दूसरी बेटी 'सुन्दरी' को गणित का ज्ञान दिया।

इस अवसर्पिणी में पढ़ाने का पहला जिम्मा माता ने नहीं, वरन् पिता ने उठाया था। क्योंकि पिता में शिक्षक जैसी सख्ती होती है, जो माता में नहीं होती। मम्मी हमें 100 बार बोलें कि 'पढ़ने बैठ जा, Homework कर ले', लेकिन हम नहीं सुनते, और खेलने में व्यस्त रहते हैं। लेकिन जैसे ही पता चले कि पिता के आने का समय हो गया है, तो तुरन्त बैग खुल जाता है, फटाफट books निकलने लगती हैं, मानो हमसे ज्यादा समझदार कोई है ही नहीं। और चुपचाप हम पढ़ाई करने बैठ जाते हैं। पिता ज्यादा कुछ बोलते नहीं, लेकिन जब बोलते हैं, तो हमारे मुँह से जवाब नहीं निकल पाता। पिता सिर्फ इतना ही कहते हैं, "क्यों? क्या हुआ?" बस इतने में तो Pindrop Silence हो जाता है। मम्मी से तो चाहे जैसे बात कर लेते हैं, लेकिन पिता के सामने बात करते हुए अपने आप ही आँखें झुक जाती है। मम्मी के साथ तो लम्बी-लम्बी बातें चलती हैं, लेकिन पिता के साथ, सिर्फ औपचारिक बातें ही हो पाती है। मम्मी के साथ" तूं – ता " से बातें हो सकती है मगर पापा से बातें करते वक्त " आप " अपने आप आ जाता है। **क्योंकि बाप, बाप होता है।**

• H - Hero

'मेरे पापा की Driving एकदम मस्त है', 'मेरे पापा Shave करते हैं, तो मैं उनको ही देखता रह जाता हूँ', 'मेरे पापा तो आधे घण्टे तक Swimming कर सकते हैं' - अपने पिता की 'हीरोपंती' बताने वाले ऐसे अनेक संवाद बच्चों के मुँह से हम सुनते रहते हैं। क्योंकि सन्तान का Super Hero उसका अपना पिता ही होता है।

• E - Encouragement

पिता घर की जरूरतें और हमारे शौक पूरा करने में समय का भान भूल जाते हैं। और फिर बूढ़े हो चुके उस बाप से हम सवाल करते हैं, 'आपने हमारे लिए किया ही क्या है?' पिता अपने सपनों के लिए नहीं, बल्कि हमारे सपनों के लिए जीते हैं, उन्हें साकार करने के लिए सख्त मेहनत करते हैं, साथ ही हमें भी अपने सपनों को पूरा करने की प्रेरणा देते हैं। हमारे प्रोत्साहन का Power House हमारे पिता ही हैं। कितनी भी निराशा या हताशा हो, वे हमारे साथ मजबूती के साथ खड़े रहकर हमारा मनोबल बढ़ाते हैं।

• Role Model

बालक हमेशा अपने पिता के जीवन की Videography करता है, पिता जो काम जिस प्रकार करते हैं, बच्चा उस Style की Copy करके अपने आप को महान समझता है। बालक के लिए पिता से बढ़कर और कोई आदर्श नहीं होता।

My father didn't told me how to live.
He lived, and let me watch him doing it.

Last Seen :

Fathers are just a male version of mothers.

- Daniel Feral

परमात्मा बनाने के 20 Steps

सफर : संसार से सिद्धशिला

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

दूसरा पड़ाव - सिद्ध

Hello Friends !

हम तो चले हैं फिलहाल उस यात्रा पर जहाँ मंजिल पर भगवान खुद खड़े हैं,और बड़ी बेसब्री से हमारा इंतजार कर रहे हैं, बाहें फैलाये हमे खुद की आगोश में समा लेने को आतुर है, प्रभु हमे भगवान बना देने के लिए उत्सुक है ।

भगवान बनने के बीस कदम हैं । उसमें से आज हम दूसरे कदम को जानेंगे। दूसरा चरण है, सिद्ध पद की उपासना।

दुनिया में बहुत से स्कॉलर,क्वॉलिफाई लोग मिलेंगे कोई C.A. की डिग्री वाला होगा, कोई MBA की डिग्री वाला होगा, कोई CFA करेगा। किन्तु क्या ऐसा मिलेगा जिसके पास दुनिया भर की देश-विदेश की सभी डिग्रीयाँ हो ?

सभी अलग अलग टेंडेंसी होती है, अलग-अलग स्किल्स होती है, चाह कर भी कोई हर एक क्षेत्र में महारत नहीं पा सकता,जो पाना चाहता हैं, वह सब कुछ नहीं पा सकता,जो बनना चाहता हैं वह नहीं बन सकता।

किसी महिला को रसोई बनाने की कला सिद्ध होती हैं, वह बातें करती रहती हैं और खाना पकाती रहती हैं पर उसके हाथ से उतना ही मसाला गिरता है, जितना गिरना चाहिए। उसका हाथ भी सभी डिब्बों में से निश्चित हल्दी या मिर्च के डिब्बे पर ही गिरता है, बगैर देखे, मानों कि उसके हाथो पर ही आँखें लग गई हो।

कोई कलाकार आँखे मूँद कर भी की-बोर्ड को बिलकुल सही ढंग से बजा सकता हैं, उसे संगीत की कला सिद्ध हो चुकी है।

कोई चित्रकार हाथ में ब्रश लेकर दो तीन कलर्स मे उसे डुबो के देखते ही देखते कैनवास पर रंगो का संसार भर देता हैं, क्योंकि उसे वह कला सिद्ध हो चुकी है।

ऐसे कोई न कोई कलासिद्ध - कर्मसिद्ध तो बहुत से मिलते है। किन्तु सभी विषय में जिन्होने सिद्धि पा ली हो,वे कहलाते हैं सच्चे सिद्ध। और उनका मुकाम इस संसार से परे है। दुनिया का सबसे ऊँचा स्थान उन सिद्ध भगवंतो के लिए मुकम्मल किया हुआ है। उसे मोक्ष स्थान - सिद्धशिला के नजदीक का स्थान कहते हैं।

इस सिद्धशिला पर जिनका निवास हैं, उनको सदाकाल के लिए हर एक प्रकार की ऋध्दि, लब्धि एवं संपत्ति प्राप्त है। वह हमेशा आनंद में है, उन्हें सभी चीजों का संपूर्ण ज्ञान है, ऐसा कोई भी प्रश्न नहीं जिसका जवाब उनके पास नहीं हैं। सुख और दुःख के बीच वाली अवस्था पर वे सदाकाल स्थित है,जिसे आनंद की अवस्था कहते हैं। वो कुछ करते नही बस खुद की मौज में डूबे हुए अनंत काल तक रहते हैं, कुछ करने का आनंद नहीं, संपूर्ण होने का आनंद डर हमेशा उनके अनुभव में बरकरार रहता है।

Siddha Pad

सिद्ध तो सिद्ध ही हैं, उनकी बात वो जाने, हमें तो भगवान बनना है, तो उनकी भक्ति करनी है, उनकी भक्ति के लिए ये गाना गाना है।

सिद्ध पद

(एक प्यार का नगमा ..)

- सिद्धि के धारक हो, अरिहंत पद दायक हो,
  सिद्ध प्रभु ! में बिनती, मेरे लक्ष्य में बने रहना ।।।
  कर्मो का क्षय करके, उस मोक्ष को पाया है,
  नहीं कोई यहाँ अपना, दुनिया को ये सिखाया है,
  मेरे अंतर के मल का वैसे ही दहन करना.... (1)

- अविनाशी हो प्रभु ! तुम और सब कुछ विनाशी है।
  सत्ता, संपत्ति, स्वजन ना कोई साथी है।
  अविनाशी भक्ति का मुझको भी वर देना ..... (2)

- अरिहंत की आज्ञा पर,
  जब आप रहे थे अचल ;
  तब पाया पद ये अचल,
  और बन गए अमर अमल
  मेरी चंचलता हर कर,
  मुझे सत्व अचल देना.....(3)

  (।। सिद्ध पद।।)

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

Mind Charger

आचारः प्रथमो धर्मो

पूज्य मुनिराज श्री अक्षयकीर्ति विजयजी म.सा.

"आचारः प्रथमो धर्मो, नृणां श्रेयस्करो महान्।
इहलोके पराकीर्तिः, परत्र परमं सुखम् ।।"

Mostly आजकल अनाचार का ही trend हो गया है। Dressing, eating, earning etc. everywhere अनाचार spread हो गया है। लोगों की मनोवृत्ति बहुत विकृत हो गई है, इस कारण लोगों की Life अनाचारों से भर गई है। चाहे कोई भी व्यक्ति हो, बालक, युवा या वृद्ध, अनाचार के अजगर ने सबको अपनी पकड़ में ले रखा है।

एक हास्यास्पद प्रसंग याद आता है, अठारहवीं बार अपराध करते हुए पकड़ा गया एक लड़का अपने पिता के साथ कोर्ट में हाजिर हुआ। जज ने पिता से पूछा, "तुम्हारा बेटा अठारहवीं बार चोरी करते हुए पकड़ा गया है, तुम उसे समझाते क्यों नहीं?"

तो पिता ने कहा, "जनाब ! ऐसा है, कि इसे कई बार समझाया कि चालाकी से चोरी करनी चाहिए, ऐसे बार-बार पकड़े जाना ठीक नहीं है। लेकिन अभी छोटा है, हाथ की सफाई अब तक नहीं आई, एक बार हाथ बैठ गया, फिर आपको तकलीफ नहीं देगा।"

आज के लोगों की मानसिकता भी कुछ ऐसी ही है। अनाचार मात्र प्रिय नहीं बना, बल्कि जीवन बन चुका है। अनाचार करूँ या नहीं, ऐसी विडम्बना नहीं रही, बल्कि कर्तव्य बन गया है।

आज समाज में, परिवार में और व्यक्तिगत जीवन में बड़े-बड़े अनाचार प्रवेश कर चुके हैं। और छोटे कहलाए जाने वाले अनाचार तो सहज बन चुके हैं लेकिन एक बात स्पष्ट रूप से जान लीजिए, और समझ लीजिए, कि **"अनाचार लोगों के Mind में और Life में Well-set हो गया है, इसीलिए सुख, शान्ति, प्रसन्नता, पवित्रता, परस्पर प्रेमभाव, पारिवारिक स्नेह, परोपकार, वफादारी आदि upset हो चुके हैं।"**

प्रस्तुत सूत्र में सुभाषितकार आचार की महिमा बताते हुए कहते हैं, कि **" आचार, मनुष्यमात्र का प्रथम कर्तव्य है।"**

आज के लोग अपनी-अपनी रुचि और समझ के अनुसार मात्र Education, या मात्र Money, या मात्र Relation, या मात्र Family या मात्र Enjoyment etc को ही Importance देते हैं।

MIND CHARGER

किन्तु अपने Mind में इतनी बात Set कर लीजिए कि Education का क्षेत्र हो, Business का क्षेत्र हो, Politics का क्षेत्र हो या Social क्षेत्र, Everywhere आचार इस First and Must.

आप Well Educated Person हैं, या आप Richest Person हैं, या आप Powerful Person हैं etc, ये सब Second Number की बातें हैं। First Number में आप आचार सम्पन्न होने चाहिए। आचार इक्का है, और Education आदि सब शून्य हैं।

आज का Trend भले ही अनाचार का है, किन्तु आज की Requirement तो आचार की है।

हमारी आर्य संस्कृति में नीति, प्रमाणिकता, मर्यादा आदि मूल आधारों के साथ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि उत्तम आचारों की महिमा बताई गई है। आज नीतिभ्रष्टता, मर्यादाभ्रष्टता आदि रूप में आचारभ्रष्टता चारों ओर विपुल मात्रा में बढ़ रही है। ऐसे समय में आचार के प्रति लोकमानस में प्रेम और जागृति उत्पन्न हो इस हेतु से Education System आदि में बहुत बदलाव की जरूरत है।

आचार की महिमा को एक उपमा द्वारा समझने का प्रयास करते हैं:

• आचार = Sunlight, जो Life में Everytime and Everywhere प्रकाश देता रहता है और अनेकों के जीवन को प्रकाशित कर देता है। **जैसे सूर्य की उपस्थिति में अन्धकार नहीं आ सकता, वैसे ही आचार की उपस्थिति में प्रायः आपत्ति नहीं आ सकती।** यदि कभी आचारसम्पन्न व्यक्ति को कभी कोई आपत्ति आ भी गई, तो वह पूर्वकृत अनाचार का फल है, ऐसा समझें।

• आचार = Moonlight, जो Life में Everytime and Everywhere शीतलता देती रहती है। आचार ठण्डक देता है, अनाचार जलाता है, आचार निर्भय बनाता है, अनाचार भयभीत करता है।

अनाचार करने वाले लोगों को जेल हुई, नोटबन्दी के समय अनेक छोटे-बड़े धनिक लोग टेंशन में आ गए थे। जिसके पास White का (नीति का) पैसा (व्यवहार) था वे लोग निश्चिन्त थे। प्रत्येक छोटे-बड़े आचार या अनाचार के मामले में इस प्रकार Plus - Minus समझें।

अनाचार से मिलने वाली खुशबू **परफ्यूम** जैसी होती है, जो समय के साथ उड़ जाती है। आचार से मिलने वाला आनन्द **चन्दन की लकड़ी** जैसा है, जो सदैव स्थिर रहता है।

धनवान, रूपवान, कलावान, सत्तावान (सत्ताधीश) व्यक्ति प्रसिद्ध भले ही होते हों, किन्तु प्रिय हो ऐसा जरूरी नहीं। इसके विपरीत आचारसम्पन्न व्यक्ति प्रसिद्ध भले ही न हो, किन्तु प्रिय अवश्य होता है। एक संस्कृत सुभाषित है, **आचाराल्लभते धनम्**, आचार से धन प्राप्त होता है। **आचारात्सर्वमाप्नोति**, आचार से सब कुछ प्राप्त होता है।

प्रस्तुत सूत्र में भी सुभाषितकार आचार का फलकथन करते हुए कहते हैं, कि **आचार से इस लोक में Top Level की यश एवं कीर्ति प्राप्त होती है। और परलोक में Top Level के सुख की परम्परा मिलती है।**

अंग्रेजी सुभाषित में लिखा है, Chastity is life, sensuality is death. सदाचार ही जीवन है, और दुराचार ही मरण है। All time सुखकारी और हितकारी आचार को अपने व्यक्तिगत जीवन में, परिवार में, समाज में सर्वत्र First and must बनाते रहिए।

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

Think Beyond

सहिष्णुता से सिद्धगति

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक भाई मिलने के लिए आए, और बोले, "महाराज जी ! हमारा घर चौमुखी मन्दिर जैसा है।" मैंने पूछा, "कैसे?" तो वे बोले, "चौमुखी मन्दिर में चार प्रतिमाएँ होती हैं, सभी अपनी-अपनी दिशा में होती हैं। हमारा घर भी ऐसा ही है, बेटा घर में घुसते ही अपने कमरे में चला जाता है, बेटी अपने रुम में। घरवाली किटी पार्टी में बिज़ी रहती है। किसी को किसी से कोई जुड़ाव ही नहीं। किसी का सर मोबाइल से ऊपर ही नहीं उठता। पूरा परिवार मिलकर एक साथ कभी बैठता ही नहीं।"

पास बैठे दूसरे भाई बोले, "साहेब जी ! अच्छा है कि मिलकर एक साथ नहीं बैठते, यदि बैठने लग जाए, तो आपस में झगड़े चालू हो जाएँगे। आज सब लोग असहिष्णु हैं, सबका टोलेरेंस पॉवर घट गया है। कोई भी व्यक्ति अन्य की बात सुनने को तैयार नहीं है।

जहाँ सब सुनते थे, वह सतयुग था,
जहाँ सब सुनाते हैं, वह कलियुग है।

जिस घर में सब सुनाने वाले हों, सुनने वाला कोई न हो, वह घर कभी भी बिखर कर टूट सकता है।

यदि बेटा असहिष्णु होगा, तो माता-पिता के सामने बोलेगा, यदि भाई असहिष्णु होगा तो घर के टुकड़े होंगे। यदि बहू असहिष्णु होगी तो माँ और बेटे को अलग करने का पाप करेगी, और इस पाप के उदय के समय उसका खुद का बेटा उससे सम्बन्ध तोड़ देगा।

एक बार चौपाटी पर घूमते हुए चार वर्ष का एक बच्चा गुम हो गया, छः घण्टे के बाद मिला। छः घण्टे तक उसकी माँ बिलख-बिलख कर रो रही थी। बेटा और बहू, सास-ससुर से अलग रहते थे। सास-ससुर को पता चला कि पोता गुम हो गया है, तो वे भी आश्वासन देने पहुँचे। जब पोता मिल गया, तो सास-ससुर जाने लगे, तो बहू बोली, "मम्मी जी ! आज से आपको यहीं हमारे साथ रहना है। मेरा बेटा सिर्फ छः घण्टे के लिए मुझसे दूर हुआ, तो मुझ पर क्या बीती, मुझे पता है। और मैंने आपसे आपके बेटे को जीवन भर के लिए अलग कर दिया, तो आप पर क्या बीत रही होगी? अब मुझे पता चल रहा है। आप मुझे माफ़ कर दीजिए। अब आपको कहीं नहीं जाना, हमारे साथ ही रहना है।"

"सहन करो, और एक साथ रहो"

संसार में हर क्षेत्र में सहिष्णुता की जरूरत रहती है। शारीरिक क्षेत्र हो या पारिवारिक, आर्थिक क्षेत्र हो या धार्मिक-आध्यात्मिक, हर क्षेत्र में सहिष्णुता की जरूरत रहती ही है।

गजसुकुमार मुनि हो या खन्धक मुनि, सबने सहिष्णुता रखी, जो भी कष्ट मिले उन्हें हंसते-हंसते सहन करने की मानसिकता रखी, तभी तो सिद्धगति मिली। कहा भी है:
जो सहन करता है, वह शुद्ध बनता है,
जो शुद्ध बनता है, वही सिद्धगति पाता है।

• जो अपने स्वजनों को सहन नहीं करता, उसे दुनिया का सहन करना पड़ता है।

• आइए आज हम सब कम से कम इतना संकल्प अवश्य करें, कि "मैं अपने उपकारी माता-पिता आदि की बात का कभी विरोध नहीं करूँगा, सहन करूँगा, स्वीकार करूँगा।"

श्रमणी! जिनशासन मणि

जिनशासन के हीरे मोती

संजयभाई वखारिया

रत्न का स्थान तिजोरी में और राख का स्थान कचरे के ढेर में होता है। रत्न जैसे जीव शासन की सेवा करते हैं, और राख जैसे जीव संसार में पड़े रहते हैं।

रत्न ढूंढने पर भी कम मिलते हैं, कभी मिलते, कभी नहीं भी मिलते हैं। रत्नों की प्राप्ति अल्प होने पर भी हमें उनके प्रति प्रेम होता है।

जिनशासन अनेक विविधता पूर्ण रत्नों से भरा हुआ है, और सभी रत्न गुण समृद्ध है। ऐसे कोई ना कोई रत्न हमें भी गुण समृद्ध करने के लिए हमारा इंतजार कर रहे हैं। इन रत्नों के प्रति हमें हृदय से अहोभाव विकसित करना है, ताकि हम भी गुणों के खजाने से समृद्ध बन सकें।

जिनशासन की साध्वी श्रृंखला में ऐसे सुख समृद्ध रत्न बहुत हैं। आर्या ब्राह्मी-सुन्दरी से प्रारम्भ करते हुए आर्या चन्दनबाला तक, और वर्तमान परम्परा में भी ऐसे अनेक गुण समृद्ध श्रमणी भगवन्त हैं, जिनकी संयम साधना, आज्ञा आराधना, उत्कृष्ट उपासना, सर्वोत्कृष्ट शासन राग के सामने हम नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकते।

ऐसी बेजोड़ बेमिसाल श्रमणी परम्परा में एक अनमोल रत्न हुआ, जिसका नाम था साध्वी पद्मश्रीजी म.सा। वि. सं. 1268 में खम्भात में कोट्याधिपति श्रीमन्त श्रेष्ठि के घर एक दिव्य आत्मा का अवतरण हुआ। कन्यारत्न का जब जन्म हुआ तब उसके ललाट पर अप्रतिम भाग्य का तेज चमक रहा था। सोने के घुंघरुओं से खेलती, सुखपूर्वक बचपन को जीती यह कन्या अपने दादा के साथ समीप में रहे जिनालय तथा उपाश्रय में भी

जाती रहती थी। एक बार आचार्य श्री धर्ममूर्ति म.सा. उस जिनालय में आए, तो दर्शनार्थ दादा और पोती भी पहुँच गए।

कन्या का भाग्य जो भविष्यवेत्ता भी पढ़ ना सके, उसे आचार्य ने तुरन्त जान लिया, और दादा से कहा, "इस कन्या को जिनशासन को सौंप दीजिए। यह कन्या प्रभावशाली है, ये स्व एवं पर का कल्याण करेगी।

पुण्यशाली परिवार ने भी अपने कलेजे के टुकड़े जैसी इस कन्या को बड़े उत्साह से, ठाट-बाट से दीक्षा दी। 8 वर्ष की पद्मा, अब पूज्य साध्वी श्री पद्मश्रीजी म.सा. बन गए।

आश्चर्य की बात तो अब शुरु होती है।

दीक्षा के बाद तो बाल साध्वी सब को बहुत प्रिय-मीठे लगते थे। गुरुणी के पास बैठी हुई बाल साध्वी का आकर्षण अभूतपूर्व था। वन्दन के लिए आई हुई सारी श्राविकाओं-कन्याओं की नजरें उनके मुख से हटती नहीं थी। वे सबके दिल में बस गई थी। सब उस बाल साध्वी से दीक्षा लेने का मन बनाती थी।

विश्वास नहीं होगा, पर वास्तव में केवल तीन साल के दीक्षा पर्याय में ही बाल साध्वी 700 शिष्याओं की गुरुणी बने। अल्पायु में ही प्रवर्तनी पद को विभूषित किया और केवल तीन-चार साल में परम पूज्य साध्वीश्री पद्मश्रीजी महाराज साहेब को सूरि भगवन्त ने "महत्तरा" की पदवी से विभूषित किया।

उत्कृष्ट संयम आराधना, दृढ चारित्र और अगाध ज्ञान से परिपूर्ण आर्या सबकी आदर्श थी।

संयम, आज्ञापालन तथा तप साधना में उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर विचरने वाली इन श्रमणी भगवन्त ने केवल 28 वर्ष की अल्पायु में ही संचित पुण्य को भोगने के लिए तथा अधिक उत्कृष्ट साधना करने के लिए सद्गति की ओर प्रयाण किया।

उस काल में पूज्य सूरि भगवन्तो की गुरुमूर्ति भी कभी-कभी बनती थी, ऐसे समय में वि. सं. 1298 में महत्तरा साध्वी जी की प्रतिमा का निर्माण हुआ। यह प्रतिमा काल कि करवटें बदलने पर भी आज मातर तीर्थ में श्री सुमतिनाथ प्रभु के जिनालय में विद्यमान है।

अनोखी संयम मूर्ति, तप मूर्ति श्रमणी भगवन्त के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !!

जय हो...! जय हो...! महत्तरा साध्वी
श्री पद्मश्री म.सा. की जय हो... !!

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

www.faithbook.in

Faithbook
ACTIVITIES BEYOND BOOK

21st JUNE 2020
Issue 02 • Part 04
BOOK 008

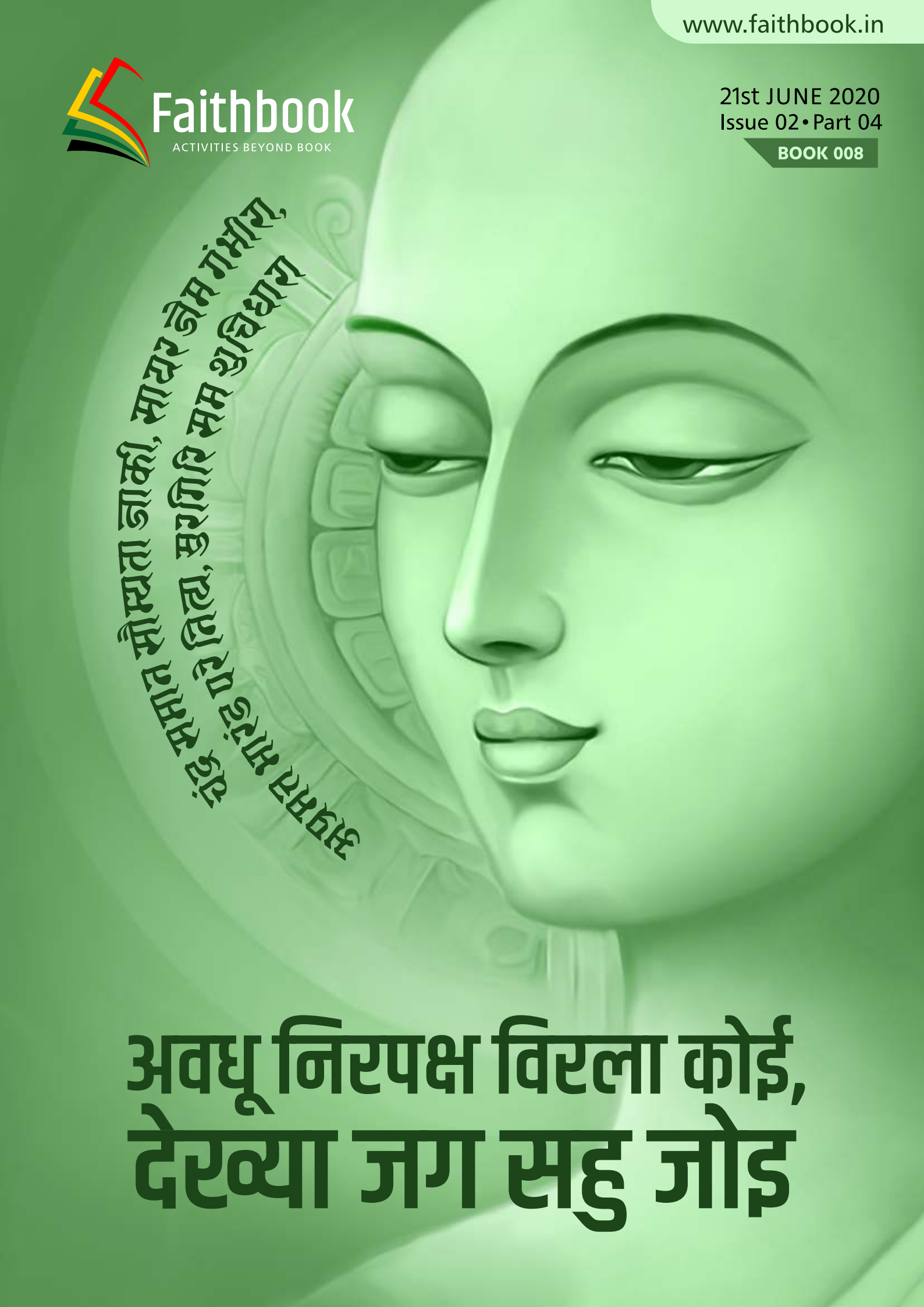

अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सहु जोइ

|| वंदामि जिणे चउव्वीसं ||
|| पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

प्रेरणा
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक
नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time: 2pm to 7pm)
Mobile - 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

• लाभार्थी •
पू. मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. की प्रेरणा से
चंद्राबेन कीर्तीलाल फडीया
रूपाल – मलाड

पू. मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा. की प्रेरणा से
शांतिलाल नगीनदास शाह
हरसोल – मलाड

चेतन! ज्ञान अजवाळीये

सादर प्रणाम,

जिनालय-जिनमूर्ति से भी एक अपेक्षा से अधिक प्राधान्य जिनागम का है। यह आगम-श्रुत जिनशासन की नींव है।

हमें आनंद है कि यह ज्ञान की उपासना करने का हमें मौका मिल रहा है।

'विश्व' से 'स्व' की और झांकने के लिए प्रेरित करने वाले अध्यात्मिक लेखों से सुशोभित यह चौथा भाग है। इस नॉलेज बुक में प्रभु के च्यवन कल्याणक के रहस्य को नए दृष्टिकोण से पूज्यश्री द्वारा उल्लेखित किया गया है। साथ-साथ तीर्थंकर सहित चक्र ध्यान की प्रक्रिया का लेख, विश्व योग दिवस निमित्त जैन योग विषयक लेख एवं रोमांचक नवलकथा से यह चौथा भाग महकता है।

इस सद्वाचन से आपके ज्ञान की अभिवृद्धि हो और आप दूसरों के भी ज्ञान वृद्धि में नियमित बनो यही शुभकामना के साथ...

- नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Must Read

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English and Hindi on our website's blog Visit: **www.faithbook.in**

To Receive Faithbook Knowledge Book via WhatsApp. Please Message us on **81810 36036**

Click on below icons to Follow, Like & Subscribe : **FaithbookOnline**

All icons are Clickable

JAI BHAIRAV GRAPHICS : 9821344432

साधना के भीतर

सत्य ध्रुव है

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

प्रभु महावीर 'सत्' को जीने वाले थे। 'सत्' उनका जीवन-दर्शन था।
सत् का अर्थ है सत्य, और सत्य का अर्थ है ध्रुव।
जो ध्रुव नहीं है, वह पारमार्थिक सत्य भी नहीं है।
वह मात्र व्यावहारिक सत्य है....।
व्यवस्था संचालन के लिए व्यावहारिक सत्य आवश्यक है।
पारमार्थिक सत्य का व्यवस्था अथवा आवश्यकता के साथ कोई संबंध नहीं है।
सत्य मुक्त होता है।

जो मुक्त नहीं है, वह स्यात् असत्य है।

देवलोक से च्यवन करने के एक क्षण पूर्व प्रभु के मानस-मंडल पर क्या विचार आये होंगे? हम जैसे घटना-प्रेमी के मन में ऐसी उत्सुकता का प्रकट होना सहज है। परंतु, प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रभु भी घटना-प्रेमी हैं?

प्रभु तो वह हैं, जो कि अघटित है।
अघटित को घटना के प्रति कैसी उत्सुकता? आकाश को बादलों के लिए भला कैसा आश्चर्य? होता भी है तो वह केवल औचित्य ही होता है।

औचित्य घटना नहीं है। घटनाओं के बीच से सम्पूर्ण रूप से अलिप्त प्रवेश करने की कला का नाम औचित्य है। औत्सुक्य घटनाओं से प्रभावित होने की नादानी है।

प्रभु का जीव अनुपम औचित्य का धनी है।
क्षणार्ध के बाद ही च्यवन होने वाला है।
यह च्यवन एक घटना है।
घटना कल्याणक नहीं बनती।

घटना घटते हुए भी चेतना का अघटित होना ही कल्याणक बनता है। इतनी सामर्थ्यवान् होती है प्रभु की चेतना।

इसलिए प्रभु के साथ घटने वाली घटना के पीछे कल्याणक शब्द प्रयुक्त होता है।

प्रभु की घटना-मुक्त चेतना के अभिवादन में घटनाकाल में प्रकृति समस्त विश्व को रोमांचित करने वाला स्वागत-कृत्य करती है। परंतु, इस तीन लोक में होने वाली अलौकिक घटना से प्रभु जी अलिप्त रहते हैं। क्योंकि, प्रभु तो स्वयं प्रकाश हैं। प्रकाश को भला कौन चकाचौंध कर सकता है?

प्रभु जानते हैं कि च्यवन होगा। च्यवन के बाद क्या-क्या घटित होगा, यह भी प्रभु जानते हैं। उपरांत प्रभु को वंदन-प्रणाम करने के लिए इन्द्रादिक देव भी आयेंगे, यह भी देवलोक से च्यवन करने से पूर्व प्रभु का जीव जानता है।

एक भगवान के रूप में अवतरण हो रहा है, यह खबर है उन्हें। स्वयं जिस देवलोक में हैं, वहां के देव-देवेन्द्र मेरु पर्वत पर अभिषेक करेंगे, इससे भी वह अनभिज्ञ नहीं हैं। इन सारी घटनात्मक जानकारियों से इस देव के अंतस्थल में खास निस्बत नहीं है।

निश्चल अस्तित्व को कितनी भी सुन्दर घटनाओं की चादर चढ़ा दो, वह क्षणिक है। इसका समय पूरा होते यह नामशेष हो जाती है। प्रभु इस प्रकार की चलायमान घटनाओं से बनने वाले नहीं हैं। वस्तुतः जानने योग्य घटना तो यह है कि प्रभु बनते नहीं हैं। प्रभु होते हैं। निश्चल अस्तित्व घटना नहीं, अघटित सत्य है....। प्रभु सत्य को जीने वाले होते हैं। इस सत्य में ही प्रभु की प्रभुता है।

घटना को आकार प्रदान कर देने वाली शक्ति प्रभुता नहीं है। अपितु, विविध आकारों के बीच निराकार बने रहने का वैशिष्ट्य प्रभुता है।

प्रभु का साधनाकाल मात्र दीक्षा लेने के उपरांत का ही नहीं था। वह तो च्यवन से पूर्व ही सिद्ध साधक थे। दीक्षा के उपरांत प्रभु की साधनाओं को समझने के लिए दीक्षा, जन्म व च्यवन से पूर्व प्रभु की आंतर विश्व की भूमिका को समझना आवश्यक है। क्योंकि, प्रव्रज्या भी इस भूमिका से ही उठी है।

प्रभु की उपयोगात्मक साधना का अनुभव किये बिना उनकी योगात्मक साधना का मूल्यांकन करना प्रभु के लोकोत्तर स्वरूप का अवमूल्यन होगा।

प्रभु महावीर की योगात्मक साधना प्रभु पार्श्वनाथ की योगात्मक साधना से अधिक थी। प्रभु महावीर की साधना साढ़े बारह वर्ष तक चली थी, जबकि प्रभु पार्श्वनाथ की साधना 83 दिन में ही पूर्णता को प्राप्त कर गई।
किसको महान् कहा जायेगा?
कालगणना महानता का मापदण्ड नहीं है।
क्रियात्मक योगोद्वहन एक घटना है।
जो घटनातीत है, अघटित है, त्रिकाल है, ध्रुव है, निरंतर है; ऐसी शुद्ध निजताएं जो एकाकार हो जाती हैं, और फिर उसी स्वरूप में सदा रहते हैं, वह एक समान महान् होते हैं। उसमें कोई भेद नहीं रह जाता।

इस प्रकार चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की साधना-पद्धति एवं साधना-काल में भेद हो सकता है, परंतु सभी चौबीस तीर्थंकरों की पूजनीयता में कोई भेद नहीं रहता।

प्रयत्न की निरंतरता से प्राप्ति की उपलब्धि होती है, यह भौतिक जगत का मान्य नियम है। परंतु, आध्यात्मिक जगत में ऐसा नहीं है। यहां पर बाह्य रूप से किये गये प्रयत्नों का कोई औचित्य नहीं। इससे आंतरिक प्राप्ति में कोई फर्क नहीं पड़ता। यहां मात्र समानता है, पूर्णता है।
हां, यह अलग बात है कि उपकार और निकटता के

संबंध में प्रभु महावीर के प्रति पूज्यता का भाव स्वतः स्फुरित होता है। परंतु सभी तीर्थंकर भगवंतों की पूजनीयता समान है।

प्रभु महावीर के जीवन के माध्यम से हमें सभी तीर्थंकरों की साधना के एक केन्द्रित आयाम और आम्नाय को पहिचानना है।

इससे एक बात निश्चित हो जाती है कि साधना के बाह्य परिबलों की संख्या भले ही असंख्य है, परिवर्तनशील है, परंतु आंतरिक परिबल सभी का एक समान व सुनिश्चित है।

अनंत तीर्थंकर भगवंत इस आंतरिक परिबल की बिना अर्थ-भेद देशना प्रदान करते हैं। इसमें शब्द-भेद संभव है, क्यों कि ये बाह्य परिबल हैं।

कल्पसूत्र का एक सूत्र है- चइस्सामित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणइ, चुएमित्ति जाणइ। बहुत से भाग्यशालियों ने इन शब्दों का श्रवण किया होगा। इनका सामान्य अर्थ है-

प्रभु देवभव के अंतिम क्षणों में 'मेरा च्यवन होगा', यह जानते थे। 'मेरा च्यवन हो रहा है', यह नहीं जानते थे, किन्तु 'मेरा च्यवन हो गया है', यह जानते थे।

यह सामान्य अर्थ है, जिसका गूढार्थ श्रोताओं की समझ में नहीं आता है। परंतु इसमें प्रभु की साधक-भूमिका का उत्कृष्ट चित्र उपस्थित होता है।

अवधिज्ञान से पौद्गलिक घटनाओं का ज्ञान होता है। परंतु यह घटना यदि अनेक समय की है, तो पौद्गलिक घटना भी अवधिज्ञान से नहीं जाना जा सकता है।

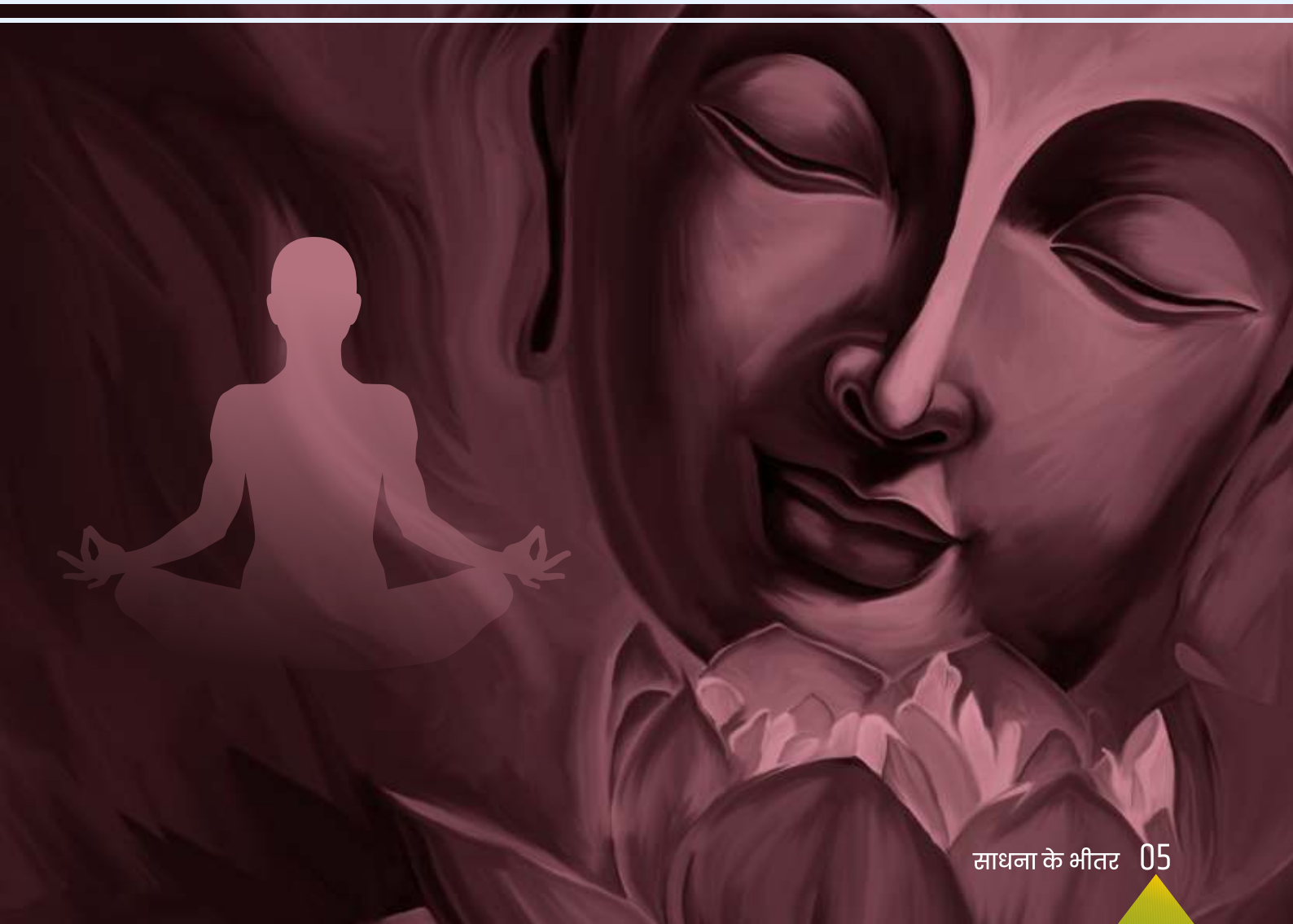

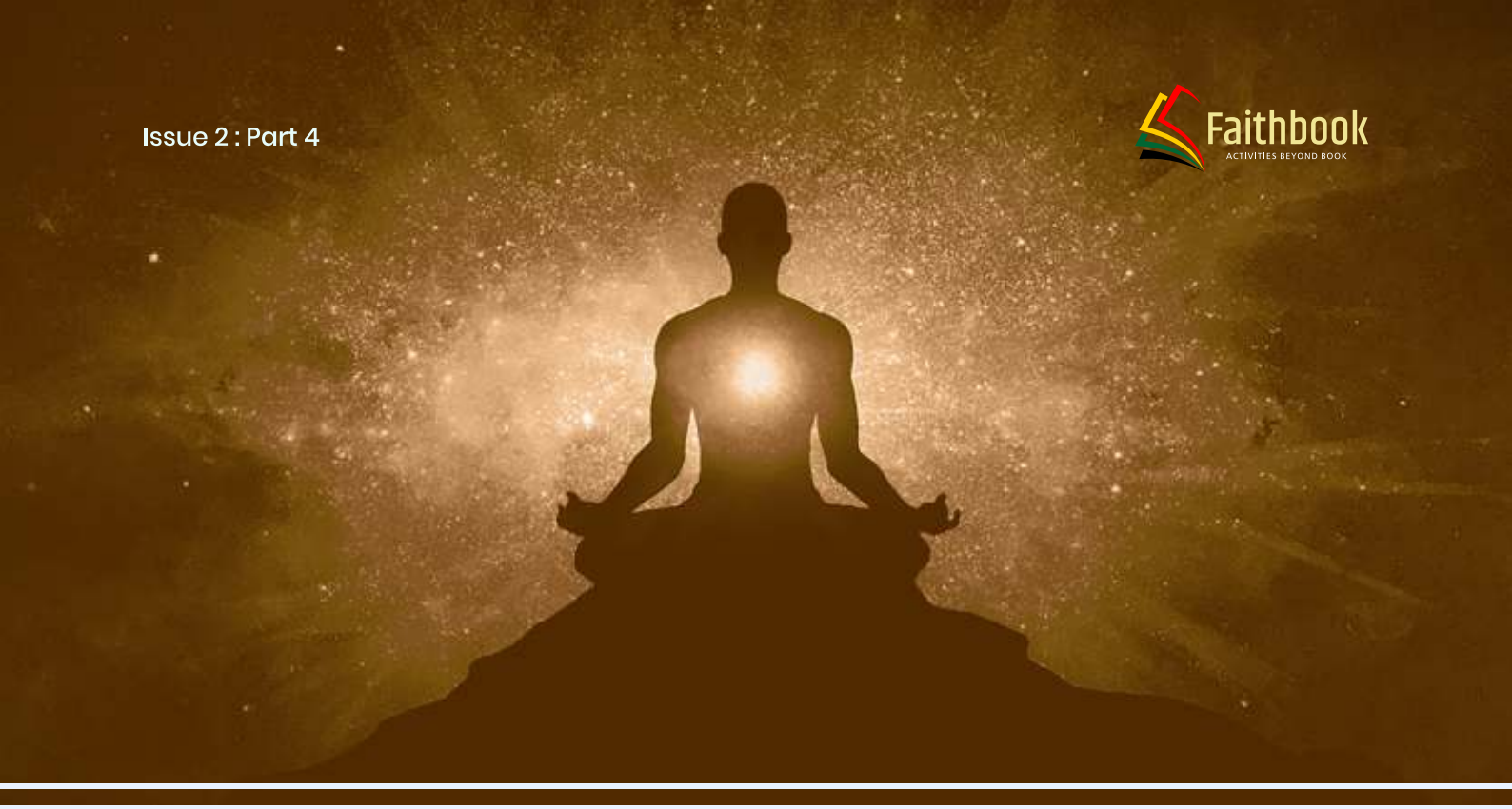

देवभव से च्यवन करने वाले प्रभु च्यवन के पूर्व, च्यवन के समय और च्यवन के उपरांत भी अखण्ड अवधिज्ञान के धारक होते हैं।

च्यवन के समय की घटना से प्रभु को कोई प्रयोजन नहीं, परंतु घटना के समय जो अघटित है, वही प्रभु का प्रभुत्व है। प्रभु भूत, भविष्य और वर्तमान को जानना, न जानना, इन सब से परे अविचल प्रतिष्ठित हैं।

'मैं च्यवन कर रहा हूं', यह जानते हुए भी हृदय में कोई उथल-पुथल नहीं, कोई हर्ष नहीं, कोई उद्वेग भी नहीं। मात्र जानते हैं, वह भी इसलिए कि ज्ञान होता है।

'मैं च्यवन कर रहा हूं', यह जानते हुए भी कोई व्याकुलता नहीं। कुछ छूट रहा है, उसकी विह्वलता नहीं। नहीं जानते हैं, वह भी इसलिए कि ज्ञान नहीं हो रहा है।

'मेरा च्यवन हो चुका है', यह जान कर कोई कठिनता या उत्सुकता नहीं। अनुकूलता या प्रतिकूलता का भी अनुभव नहीं करते। मात्र जानते हैं, क्योंकि ज्ञान हो रहा है। इन तीनों घटनाओं में जानना और न जानना, दोनों स्थितियां हैं।

प्रभु इनमें से किसी में भी नहीं हैं। तो फिर प्रभु कहां हैं?

जानना, न जानना, ऐसा साक्षी रुप में जानना है। प्रभु इस ज्ञान स्वरूप में एकाकार होते हैं।

अवधिज्ञान में घटना जानते या नहीं जानते, उससे जागृति का कोई प्रश्न नहीं उठता। उस क्षण (जब च्यवन हो रहा है), तब प्रभु अजाग्रत अवस्था में हैं। ऐसा आरोप क्या कोई ज्ञानी पुरुष प्रभु के ऊपर लगा सकता है? नहीं। क्योंकि जागृति का संबंध जानने या न जानने से नहीं, अनुभव के साथ है। प्रभु घटना को केवल जानते हैं, अनुभव तो स्वरूप का करना है। उसी प्रकार जब घटना को वे नहीं जानते, तब भी अनुभव तो स्वरूप का ही करते है।

प्रभु सदैव जागृत रहते थे। हां, तब भी जब एक समय में वे च्यवन कर रहे होते हैं, वे अपने अस्तित्व में लीन थे।

हम कितने पामर जन्तु हैं कि सूक्ष्म घटनाओं को नहीं जानते हुए भी केवल घटनाओं को जीते हैं। असत् में जीते हैं।

प्रभु सत् को जीते हैं। सत् अर्थात् ध्रुव----।

ध्यानयोग

मूलाधार चक्र ध्यान

पूज्य मुनिराज श्री शत्रुंजय विजयजी म.सा.

(ध्यान प्रक्रिया में क्रमांक 8 से आगे)

9. तत्पश्चात् आकाश से श्वेत वर्ण की एक बून्द आपकी ओर आ रही है, ऐसा विचार कीजिए। धीरे-धीरे उस बिन्दु का आकार बढ़ रहा है। समीप आने पर उसके दो भाग हो रहे हैं। और समीप आने पर आप एक बिन्दु में भगवान, और दूसरे में शासन देवी देख रहे हैं। और निकट आने पर आप वहाँ "सुविधिनाथ" भगवान और "सुतारा देवी" को देखते हैं। फिर उस रक्त कमल के पराग में "लँ" अक्षर के मध्य के दोनों स्थानों पर आप उनकी प्रतिष्ठा कर रहे हैं।

10. अब पुनः आकाश से आपको श्वेत पुंज आता हुआ दिख रहा है, जिसमें से चार वर्ण आते हुए दिख रहे हैं - "वँ" "शँ" "षँ" और "सँ"। इन चारों वर्ण को रक्त पद्म की चार पंखुड़ियों पर रखें। पंखुड़ियाँ स्थिर होने के बाद उनकी वहाँ प्रतिष्ठा करें। फिर उस कमल के दो तंतु उतार कर उनकी प्रतिष्ठा करें, एक का नाम "इल्तला" (प्रभु के दाहिनी ओर) और दूसरे का नाम "कालधर्मिनी" (प्रभु के बाईं ओर)।

11. फिर प्रभु का लाँछन 'मकर' जो अहिंसक है, प्रचण्ड प्रभावी और महा पुण्यशाली है, उसे आता हुआ देखें और उसे कमल में स्थापित "लँ" के नीचे (प्रभु के चरण में) विराजित करके प्रतिष्ठा करें।

12. फिर उस रक्त चतुर्दल कमल को शान्त चित्त से देखें, फिर उसे ब्रह्म रन्ध्र के पास ले जाएँ।

13. अब उस रक्त चतुर्दल पद्म को आते देखकर सबसे पहले "सुषुम्ना नाड़ी" खोलें, उस कमल को

अन्दर ले जाकर पूरी नाड़ी में घुमाएँ। फिर उसे ब्रह्म रन्ध्र के पास लाकर "वज्र नाड़ी" खोलें, उस कमल को उसमें ले जाकर पूरी नाड़ी में घुमाएँ। फिर उसे पुनः ब्रह्म रन्ध्र के पास लाकर "चित्रिणी नाड़ी" खोलें, उस कमल को उस नाड़ी में ले जाकर पूरी नाड़ी में घुमाएँ। फिर उसे ब्रह्म रन्ध्र के पास लाकर "ब्रह्म नाड़ी" खोलें, उस कमल को उसमें ले जाकर पूरी नाड़ी में घुमाएँ। फिर उसे मूलाधार चक्र के पास लाकर वहाँ स्थिर करें, और फिर प्रतिष्ठित करें।

यह मूलाधार चक्र अत्यन्त प्रभावशाली है। यह मेरुरज्जू के नीचे के भाग पर स्थित चतुष्कोणीय रक्त वर्ण का चक्र है। यह वटवृक्ष से आच्छादित है। इस चक्र में पहुँचने और कमल स्थिर करने में "ण" इसकी चाबी रूपी मन्त्र है। डाकिनी देवी और सुतारा देवी से अधिष्ठित और मकर लाँछन युक्त श्री सुविधिनाथ भगवान इस चक्र के सम्राट हैं। हम प्रभु के लिए एक थाल भरकर जासवन्ती के फूल लेकर खड़े हैं, और प्रभु को चढ़ा रहे हैं। यह मूलाधार चक्र ऐसे महा प्रभावशाली प्रभु से परम पवित्र एवं पृथ्वी तत्त्व से प्रभावित है।

जैसे यह पृथ्वी समता, सहनशीलता, धीरज इत्यादि गुणों से भरी है, लेकिन जब उसकी यह समता, सहनशीलता और धैर्य जवाब दे जाए, तो भूकम्प आदि विनाश हो सकता है; ठीक उसी प्रकार इस चक्र को भी नियन्त्रण में रखना आवश्यक है। और यदि यह चक्र सम्यक् रूप से प्रभावी हो, तो विपुल लौकिक सामग्रियों का संयोग होने पर भी साधक उन्हें छोड़कर वैरागी बनता है। वाक्पटुता, श्रेष्ठ वक्ता, विनोदी, आनन्दित, आरोग्यवान एवं पुण्यानुबँधी पुण्य का स्वामी बनता है, जिससे उसे मोक्ष प्राप्ति में मदद मिलती है। उसे कल्याण मित्र मिलते हैं, सर्व लोकमान्य, लोकप्रिय, सबका विश्वासपात्र, किसी से सम्बन्ध खराब न करने वाला, बेजोड़ आत्मविश्वासी, स्फूर्तिशील, सन्तोषी, अपनी, परिवार की, संघ की, देश की और सर्व जीवों की रक्षा करने में सक्षम बनता है। स्वयं को या अन्य को मारने का विचार न करने वाला, स्वाधीन और स्वाभिमानी बनता है, स्वास्थ्य देता है, किडनी, मेरुदण्ड, शारीरिक सूजन, पैर-कमर आदि के दर्द को नियन्त्रित करता है और साधक को स्फूर्तिशील बनाता है। ये सब गुण मूलाधार चक्र के कारण उसे प्राप्त होते हैं।

इस के अलावा इस चक्र के नियन्त्रण से यदि अनित्य लोक भावना का सतत अभ्यास किया जाए तो संसार की वृद्धि नहीं होती। और यदि मिथ्यात्व हो या अनियन्त्रित मूलाधार हो तो पापानुबँधी पाप रूपी सम्पत्ति, असन्तोषी, सुस्त, मानसिक निराश, शारीरिक बीमार, कुसंग, पराधीन, लोक में निन्दनीय, रागी, द्वेषी, रौद्रध्यानी बनता है, फलतः संसार बढ़ाता है। इसलिए इस चक्र को नियन्त्रित रखना आवश्यक है।

फिर इस चक्र को निहारते हुए इस चक्र के मूल मन्त्र "ॐ नमः सिद्धम्" का जाप करते हुए चेतना को सभी नाड़ियों से बाहर निकालें। फिर ब्रह्म नाड़ी, चित्रिणी नाड़ी, वज्र नाड़ी और सुषुम्ना नाड़ी को बन्द करते हुए अशोक वृक्ष के नीचे आकर शान्त चित्त होकर सरोवर का अवलोकन करें। फिर "ॐ शान्ति" तीन बार बोलकर दोनों हाथ मसलकर आँखों पर लगाएँ और पूरे शरीर पर हाथ फेरते हुए धीरे-धीरे आँखें खोलें।

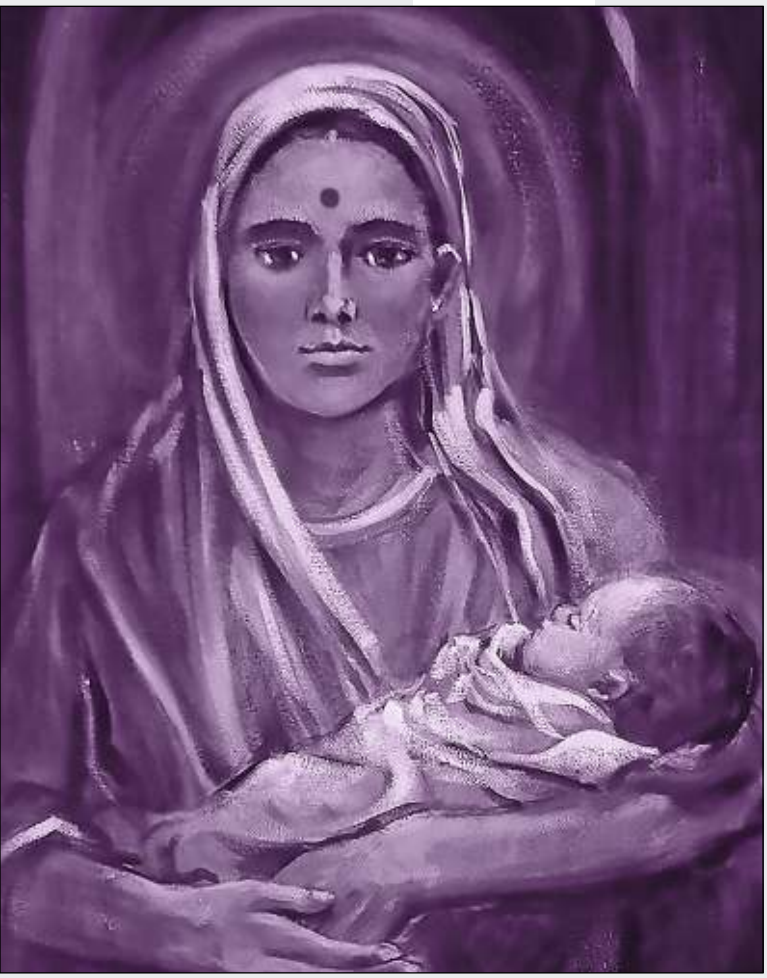

नवलकथा

Temper : A Terror (भाग-2)

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

राजतापस के चेहरे पर आनन्द छा गया। 'देखो! कितना सुन्दर बालक है। एकदम आप पर गया है।' राजतापसी ने राजतापस को सद्यः प्रसूत बालक को दिखाते हुए कहा।

अनुभवी राजतापसी ने सम्पूर्ण प्रसूति कर्म पूर्ण किया। तदुपरांत रोते हुए बालक को स्तनपान कराने लगी। दूध पीकर बालक सो गया।

'हां! तुम सच कह रही हो। यह एकदम मुझ पर गया है। अपनी वर्षों पुरानी इच्छा इस निर्जन वन में आकर पूर्ण हुई। भगवान की बहुत बड़ी कृपा है हम पर।' राजतापसी ने राजतापस की बात का समर्थन किया। 'लेकिन प्राणेश्वर! मुझे बहुत जोर की भूख लग रही है। खाने के लिए मुझे कुछ दीजिए न! भूख से मेरे प्राण निकले जा रहे हैं।' दीन मुख से राजतापसी ने विनती की।

राजतापस ने सरोवर के किनारे से लाये हुए फल दिखाए। राजतापसी का मुख प्रसन्नता से खिल उठा। उसने एक फल उठाया और मुख में रखकर उसका स्वाद लेने लगी। शक्कर जैसा मीठा। तापसी उसके स्वाद में डूब गई। दूसरा फल हाथ में लिया। 'मदना! अभी तुम सद्यः प्रसूता हो। इतना मत खाओ।' राजतापस वाक्य पूर्ण करें, उसके पहले ही राजतापसी ने दूसरा फल भी मुख में डाल लिया।

देखते-देखते राजतापसी छः फल खा गई। राजतापस देखते रह गये।

'मैं थोड़ी देर यहीं लेट जाती हूं। उसके बाद हम आश्रम चलेंगे।' इतना कह कर राजतापसी तुरंत निद्राधीन हो गई।

माता और पुत्र को एक साथ सोया देखकर राजतापस को असीम आनंद की अनुभूति हुई।

कुछ क्षण नीरव शान्ति बनी रही। राजतापस को भी नींद के झोंके आने लगे।

अचानक राजतापसी की बगल में सोया हुआ बालक रोने लगा। राजतापस की नींद उड़ गई। उन्होंने बालक को गोद में उठाकर चुप करवाने का प्रयास किया, पर निष्फल रहे।

'मदना! हे मदना!' राजतापस तापसी को जगाने लगे। प्रयत्न करने पर भी वह हिली तक नहीं।

'मदना...!' राजतापस ने तापसी को सीधा किया। राजतापसी के मुंह से झाग निकल रही थी।

राजतापस के मुंह से भयानक चीख निकल गई। 'मदना...ना.....ना.....ना....ना!'

रक्तचन्दन जैसी रक्तवर्णी ज्वाला धगधगती हुई लकड़ियों को जला रही थी। राजतापस के मुख से अकथ्य वेदना झलक रही थी। कदाचित् भविष्य में भी कोई इस वेदना को बुझा न सके, ऐसा प्रतित हो रहा था।

नगर के प्रतिष्ठित लोग चिता के चारों ओर खड़े थे। इतनी शीघ्रता से महाराणी का अन्त आ जाएगा ऐसी किसी ने भी कल्पना नहीं कियी थी। लेकिन विधि से बलवान क्या कोई होता है ?

जैसे जैसे अग्नि शान्त होती गई वैसे वैसे प्रतिष्ठित नगरजन भीतर से अस्थिर किन्तु ऊपर से स्थिर लग रहे राजतापस को सांत्वना दे-देकर यथास्थान लौट रहे थे। महाराणी के अस्तित्व को साथ लेकर अग्नि भी धीरे-धीरे शान्त हो गई। अब केवल राख और रंज ही शेष रह गए थे। राजतापस के आँखों से बह रही अश्रुधारा गोद में रहे बालक का सिंचन कर रही थी जिससे वह भी रो पड़ा, उसका रोना माँ की ममता के लिए व्याकुल था या उसके स्नेह-पाश के लिए आतुर ये बालक के आँसुओं से समझना कठिन था।

"अब इस बालक को कौन संभालेगा ?" इस चिन्ता से राजतापस का मन व्याकुल हो ऊठा। इसी चिन्ता के कारण बहुत मुश्किल से उसके पैर स्मशानभूमि को छोड़ पाए। वहाँ से वे सीधा अपने आश्रम में लौट आए।

उस बालक के पालन-पोषण हेतु उसे तापस-पत्नी को सौंप देते हैं।

सूर्यास्त के समय एक नगरश्रेष्ठी राजतापस को सांत्वना देने आए।

"राजतापस! आज यह जो अघटित हुआ है वह अत्यन्त दुःखद और आघातजनक है। मुझे इस बात का अत्यन्त खेद है कि मैं आपके लिए कुछ भी कर नहीं सका।"

राजतापस नीचे जमीन की ओर ही देख रहे थे।

"क्या अब मैं आपके किसी काम आ सकता हूँ, तो कृपा करके आज्ञा करें!", नगरश्रेष्ठी ने राजतापस से कहा। तापस के मुख पर अब थोड़ीसी शान्ति दिखाई दे रही थी।

उन्होंने कहा, "हे श्रेष्ठी! मेरी सभी इच्छाएँ संन्यास के साथ-साथ ही पूर्ण हो गई हैं, किन्तु..." राजतापस की नजरे जमीन पर सोए हुए उस बालक की ओर जाते ही फिर से उनकी आँखे नम हो जाती हैं।

"इस बच्चे की माँ इसे जन्म देते ही हमेशा के लिए छोड़ के चली गई, अब इसका क्या होगा ?" इससे आगे राजतापस और कुछ न कह सके उनका कंठ भारी हो गया था।

" राजस्वामी! आप उसकी चिन्ता छोड़ दिजीए... आज से यह मेरी जिम्मेदारी है।", ऐसा कहते हुए श्रेष्ठी ने उस नन्हे से बालक को ऊठाकर अपने गोद में लिया।

राजतापस कदाचित् जीवन में एक आखिरी बार अपने एकलौती सन्तान के दर्शन कर रहे थे।

नगरश्रेष्ठी की पत्नी अपने कंगनों को साफ करके उन्हें चमकाने का प्रयत्न कर रही थी। और क्युँ न करे? हाथों में सजे कंगन सौभाग्यवती स्त्री के आभूषण और श्रृंगार की शोभा जो होते हैं। किन्तु उन्हें साफ करते करते नगरश्रेष्ठी के पत्नी के हाथ कोयले से भी अधिक काले हो गए थे। उन हातों को साफ करने के लिए उसने घर के दास को पानी लेकर आने का आदेश दिया। दास दौड़ते-दौड़ते पानी लेकर आ गया। सेठानी हाथ साफ कर ही रही थी कि उसे घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई दियी।

"पतिदेव आ गए हैं।" ऐसा समाचार उस तक पहुँच गया। किसी काम के कारण सुबह से ही श्रेष्ठी नगर बाहर गए थे। "दोपहर तक आ जाऊँगा!" ऐसा कहकर गए थे किन्तु सूर्यास्त होने के बाद भी उनका कुछ अता-पता नहीं था।

"क्या हुआ होगा?" ऐसे अनेक तर्क-वितर्क पत्नी के मन में उमड़ रहे थे। एक कहावत तो सुनी ही होगी! "जो मन चिंती, वो वैरी मा चिंती।" मतलब जो विचार-कुविचार अपने मन में स्वयं के लिए आते हैं वैसे तो हमारे शत्रु के मन में भी हमारे लिए नहीं आते होंगे। बस कुछ ऐसी ही मनोदशा श्रेष्ठी-पत्नी की थी।

श्रेष्ठी-पत्नी व्याकुलता एवं उत्कटता की अवस्था में अपनी जगह से खड़ी हो गई। हवेली के द्वार खुले ही थे। जब तक घर के प्रधान पुरुष घर वापस नहीं लौटते तब तक घर के द्वार खुले ही रहते थे।

आर्यावर्त के संस्कार तन-मन पर आलंकृत ऐसी वह श्रेष्ठी-पत्नी अपने पति परमेश्वर का स्वागत करने प्रत्यक्ष गई। श्रेष्ठी उसके दृष्टिक्षेप में आ गए। उनके साथ गया हुआ दास भी उनके पीछे-पीछे आ रहा था किन्तु उसके हाथ में कुछ वस्तु दिखाई दे रही थी।

"आओ प्राणनाथ! पधारो!" पत्नीने श्रेष्ठी का स्वागत किया। दास पैर धोने के लिए पात्र लेकर आया। उसमें श्रेष्ठी-पत्नी ने श्रेष्ठी के पैर धोकर वस्त्र से पोंछकर सूखा दिए।

"सुलोचना!" स्नेह भरी नजरों से पत्नी की ओर देखते हुए श्रेष्ठी आगे कहता है।

"आज मैं तुम्हें एक उपहार देना चाहता हूँ। क्या तुम उसकी देखभाल करोगी?" श्रेष्ठी-पत्नी ने शरमाते हुए अपना सिर सकारात्मकता के साथ हिलाकर सम्मति दर्शायी।

"भूदास!" श्रेष्ठी ने आवाज दिई। भूदास उसकी हाथ में जो वस्तु थी उसे श्रेष्ठी के हाथों सौंपता है। श्रेष्ठी पत्नी का मुख आश्चर्य से खुला का खुला ही रह गया।

"यह... यह... किसने दिया...?", आश्चर्य एवं उत्कटता के साथ श्रेष्ठी-पत्नी के मुख से तुरंत प्रश्न निकल गया।

"देवी !" पत्नी को संबोधित करते करते श्रेष्ठी के आँखो के सामने राजतापस का भावविभोर दृश्य पुनः चित्रांकित हुआ और उसने सारा इति वृत्तान्त अपनी अर्धांगिनी को बताया और कहा, "बस, इसीलिए आज से इस बालक का नाम अमरदत्त है।"

(क्रमशः)

सर्वश्रेष्ठ जैन योग

मुकेशभाई मेहता - अहमदाबाद

मोक्खेण जोयणाओ जोगो।

आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी म.सा. अपने 'योगविंशिका' ग्रन्थ में कहते हैं कि योग वह है, जो आत्मा को मोक्ष से जोड़ता है।

भौतिक जगत में आत्मा और शरीर के जुड़ाव का माध्यम मन है। इस मन को शरीर से अलग करने का कार्य योग-ध्यान करता है, जिससे मन आत्मा में स्थिर हो जाता है। योग शरीर के माध्यम से पहले आत्मा और उसके बाद परमात्मा की यात्रा करवाता है। लम्बे समय तक शरीर की ध्यान-योग में स्थिरता साधक को समाधि पद प्रदान करती है। समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेने के उपरांत साधना में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं और अंत में बस एक चेतना बचती है, जो आत्मा को परमात्मा की ओर ले जाती है।

महर्षि पतंजलि ने समग्र मानव जाति के कल्याण तथा शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शुद्धि के लिए आठ अंगों वाले योग मार्ग का विस्तार से वर्णन किया है। इसे 'अष्टांग योग' कहा जाता है। जैन दर्शन में स्वाध्याय, ध्यान, धर्मदेशना, पडिलेहण, यम, गुप्ति, दान, शील, चरण और करण (आचार) नामक योग के अंग बताये गये हैं। इसमें पतंजलि के आठ योगों का भी समावेश हो जाता है। हमारा जैन योग अति प्राचीन है। इन सभी में ध्यान सर्वश्रेष्ठ योग है।

आज समूचा विश्व भारत के योग-विज्ञान की तरफ आकर्षित हो रहा है। हमारा यह योगशास्त्र शारीरिक, मानसिक व संवेदनात्मक शल्यों की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा प्रस्तुत करता है। प्रचलित YOGA वस्तुतः योग नहीं अपितु यौगिक क्रिया है, जिसे दुनिया योग के रूप में देखती है। योगासनों से मात्र शारीरिक अवयवों का व्यायाम होता है। शरीर निरोगी रहता है तो आयु लम्बी होती है।

जबकि, YOGA मन और इंद्रियों को अंकुश में रखने का साधन है। प्राणायाम श्वासोच्छवास की क्रिया है। कपालभाति, अनुलोम-विलोम, रेचक, कुम्भक आदि प्राणायाम की क्रियाएं हैं। इस योग-प्राणायाम से नाड़ियों की शुद्धि, स्वास्थ्य की वृद्धि और रोग प्रतिरोधक शक्ति (इम्युनिटी) का विकास होता है, जिससे तन और मन में स्फूर्ति आती है।

परंतु, मोक्ष की साधना के लिए तो एकमात्र ध्यान ही सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

• ध्यान से केवलज्ञान की प्राप्ति

धर्म-ध्यान धार्मिक क्रियाओं में आंतरिक रुचि और प्रगति को गतिशील बनाता है। क्षमा आदि दस प्रकार के धर्म से युक्त आंशिक कर्मक्षय करता हुआ धर्म-ध्यान देवलोक की प्राप्ति करवाता है। शुक्ल यानी निर्मल। संपूर्ण कर्मों का क्षय करवाते हुए निर्मल शुक्ल ध्यान, पूर्णसिद्धि-परमपद ऐसे मोक्ष की प्राप्ति करवाता है। यह उच्च कोटि का ध्यान है। यह वीतराग बनने से पूर्व की अवस्था है। अन्य ध्यानों द्वारा बहुत से शारीरिक व

मानसिक लाभ साइड प्रोडक्ट के रूप में अपने आप मिलने लगते हैं, जिनके लिए हमें किसी प्रकार के अतिरिक्त प्रयत्न करने की जरूरत नहीं होती। जैन धर्म का ध्यान कर्मों का क्षयोपशम करते हुए आत्मा में परमात्म स्वरूप को प्रकट करवाने वाला है।

• श्री सिद्धचक्रजी का ध्यान

भगवान श्री सिद्धचक्रजी की पूजा जिनशासन का सार है। जिनशासन में ध्यान के लिए बहुत से आलम्बन बताये गये हैं, जिनमें नवपद सभी से श्रेष्ठ है। नवपद का ध्यान करता हुआ आत्मा भावधर्म का सर्जन करता है। श्री गौतम स्वामी कहते हैं कि अरिहन्त आदि पदों का ध्यान करते हुए धार्मिक क्रियायें, भक्ति आदि करने से साधक का हृदय विशुद्ध बनता है। आंतरिक विशुद्धि के साथ भाव पूर्वक की जाने वाली धार्मिक क्रियायें, भक्ति आदि जीव को मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसारित करती हैं। श्री सिद्धचक्रजी का बीज मंत्र 'अर्हम्' का ध्यान ही विशिष्ट ध्यान है।

• कायोत्सर्ग ध्यान

कायोत्सर्ग ध्यान जैन धर्म की प्रसिद्ध पद्धति है। काया का त्याग कर मात्र आत्मा में स्थिर हो जाने की प्रक्रिया को कायोत्सर्ग कहा जाता है। जीव का काया (शरीर) के प्रति बहुत ममत्व भाव होता है। शरीर की ममता का त्याग अत्यंत कठिन है। जब तक काया का ममत्व बना रहेगा, तब तक आत्मा में स्थिरता नहीं होगी। काया के ममत्व त्याग के लिए अनेक दर्शनों ने अपने-अपने उपाय बताये हैं। किन्तु, इन सभी में जैन दर्शन का कायोत्सर्ग मार्ग अत्यंत सरल, प्रभावी व प्रसिद्ध है।

कायोत्सर्ग प्रक्रिया में जैन धर्म की छः आवश्यक क्रियायें समाहित हैं। कायोत्सर्ग कर्मनिर्जरा का अमोघ शस्त्र है। बाहुबली मुनि बारह वर्ष तक कायोत्सर्ग ध्यान में रहे। परमात्मा तो हमेशा कायोत्सर्ग ध्यान में ही रहते थे।

शास्त्रें में कायोत्सर्ग को सभी आभ्यंतर तपों में सर्वश्रेष्ठ व विशिष्ट बताया गया है। कायोत्सर्ग साधना का शरीर और श्वास के साथ संबंध है। इसीलिए इसे 'महाप्राणध्यान' अथवा 'परमकलाध्यान' भी कहा जाता है।

जैन धर्म में बहुत सी ऐसी ध्यान-क्रियायें हैं, जो कि साधक को मोक्ष मार्ग पर आरूढ़ करती हैं। सुषुम्ना नाड़ी में श्वास को मूलाधार से सहस्त्रार चक्र तक ले जाते हुए दीर्घ ॐकार का उच्चारण केवलज्ञान तक पहुंचा सकता है। नवकार मंत्र का ध्यान, नवकार मंत्र के बीजाक्षरों का ध्यान, समोवसरण ध्यान, परमात्मा दर्शन के साथ चक्र ध्यान, परमात्मा की भाव यात्रा ध्यान आदि साधक को मोक्ष मार्ग की योग-ध्यान यात्र में सफल बनाते हैं।

अंत में, प्राणायाम हमारी एकाग्रता में वृद्धि करता है। निर्मल व शल्य रहित मन का होना योग-ध्यान यात्र में सर्वाधिक आवश्यक है।

- Faithbook नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को Faithbook नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से Faithbook के चयनकर्ता, प्रकाशक, निर्देशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।